भारतीय वैश्विक
परिषद

साहेल क्षेत्र की राजनीति निर्णायक मोड़ पर

शासन और सुरक्षा की

आईसीडब्ल्यूए संवाद

भारतीय वैश्विक परिषद

सप्रू हाउस, नई दिल्ली

2024

भारतीय वैश्विक
परिषद

साहेल क्षेत्र की राजनीति निर्णायक मोड़ पर

शासन और सुरक्षा की भावी चुनौतियां

आईसीडब्ल्यूए संवाद

भारतीय वैश्विक परिषद

सप्रू हाउस, नई दिल्ली

2024

© आईसीडब्ल्यूए 2024

अस्वीकरण: यहाँ व्यक्त किए गए विचार, विश्लेषण और अनुशंसाएं वक्ताओं के व्यक्तिगत हैं।

विषयवस्तु

अवधारणा नोट 5

निर्णायक मोड़ पर साहेल क्षेत्र की राजनीति
शासन और सुरक्षा की भावी चुनौतियाँ
आईसीडब्ल्यूए संवाद 7

कार्यक्रम 41

बायो- प्रोफाइल 43

अवधारणा नोट

अफ़्रीका में साहेल क्षेत्र अंतरराष्ट्रीय समुदाय के ध्यान के केंद्र रहा है क्योंकि बीते कुछ वर्षों से इस क्षेत्र में राजनीतिक अस्थिरता और हिंसा बढ़ रही है। इस क्षेत्र ने सैन्य तख्तापलट, अंतर-जातीय तनाव, बढ़ते आतंकवाद, जलवायु परिवर्तन और खाद्य सुरक्षा संबंधी चुनौतियों का सामना किया है। साल 2020 के बाद से माली, बुर्किना फासो, नाइज़र, गैबॉन और चाड जैसे देशों में आठ सैन्य तख्तापलट हुए हैं। वर्तमान में, इन देशों के सैन्य शासकों ने आधिकारिक तौर पर चुनाव आयोजित करने और लोकतांत्रिक रूप से चुनी गई सरकार को सत्ता सौंपने के प्रति प्रतिबद्धता जताई है। माली, बुर्किना फासो और नाइज़र में, नए सैन्य शासनों ने फ्रांसीसी प्रभाव से मुँह मोड़कर लोगों का महत्वपूर्ण समर्थन प्राप्त किया है, फिर भी सुरक्षा चुनौतियों का समाधान करने की उनकी क्षमता निश्चित नहीं है। इन सैन्य शासनों के लिए लोकप्रिय समर्थन ने पड़ोसी लोकतांत्रिक राष्ट्रों के लिए नई चुनौतियां पैदा कर दी हैं। इसके अलावा, पिछले कुछ वर्षों में आतंकवादी समूहों की उपस्थिति और क्षेत्रों पर कब्ज़ा करने की उनकी क्षमता कई गुना बढ़ गई है।

घाना और कोटे डी आइवर के साथ बेनिन, टोगो जैसे पश्चिमी अफ़्रीका के तटीय देशों में भी आतंकवाद ने पांव पसार लिए हैं। विशेष रूप से जमात नस्र अल- इस्लामवाल मुस्लिमिन (जेएनआईएम) और इस्लामिक स्टेट ग्रेटर सहारा (आईएसजीएस) के बीच अंतर- जिहादी प्रतिद्वंद्विता भी एक बड़ी चुनौती पेश करती है।

उग्रवाद विरोधी रणनीतियों और राज्यों एवं आतंकवादी समूहों के बीच बातचीत से पर्याप्त परिणाम नहीं मिले हैं। जहां तक स्थिरीकरण प्रयासों का सवाल है, फ्रांस के नेतृत्व वाले स्थिरीकरण प्रयास विफल हो रहे हैं क्योंकि क्षेत्र में फ्रांसीसी विरोधी भावना की लहर देखी जा रही है जिसके कारण माली और बुर्किना फासो से फ्रांसीसी सेना की वापसी हो रही है। सहेलियन देश नए सुरक्षा भागीदार के रूप में रूस के वैगनर समूह की ओर रुख कर रहे हैं। माली, बुर्किना फासो और नाइज़र की वापसी के साथ जी5 साहेल गठबंधन विघटन की ओर बढ़ रहा है।

ईसीओडब्ल्यूएएस (ECOWAS) और अफ़्रीकन यूनियन जैसे क्षेत्रीय समूह बड़े पैमाने पर बढ़ती राजनीतिक और सुरक्षा चुनौतियों के खिलाफ़ आगे बढ़ने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। यह माली, बुर्किना फासो और नाइज़र समेत साहेल सुरक्षा गठनबंधन के उदय से चिन्हित है।

यह पैनल चर्चा साहेल क्षेत्र के देशों के लिए प्रमुख चुनौतियों, अब तक की प्रतिक्रियाओं और नीचे दिए गए व्यापक सुरक्षा निहितार्थों पर केंद्रित होगी:

- वे कौन से कारक हैं जो सहेलियन देशों में सैन्य शासन के विकास को आकार देते हैं?
- इन सैन्य शासनों को लोकप्रिय समर्थन क्यों मिल रहा है?

- क्षेत्र में आतंकवाद के आगे बढ़ने और फैलने को आकार देने वाली गतिशीलता क्या है और आतंकवाद विरोधी तंत्र से परिणाम क्यों नहीं मिले हैं?
- साहेल क्षेत्र में भविष्य के स्थिरीकरण उपायों की क्या संभावनाएं हैं?

क्या चुनौतियों से निपटने के लिए क्षेत्रीय संगठनों को अपनी रणनीति बदलने की जरूरत है? क्षेत्रीय संगठनों की आगे की रणनीति क्या होनी चाहिए?

सप्रू हाउस

भारतीय वैश्विक परिषद नई दिल्ली

फरवरी 2024

साहेल क्षेत्र की राजनीति निर्णायक मोड़ पर

शासन और सुरक्षा की भावी चुनौतियां

आईसीडब्ल्यूए संवाद

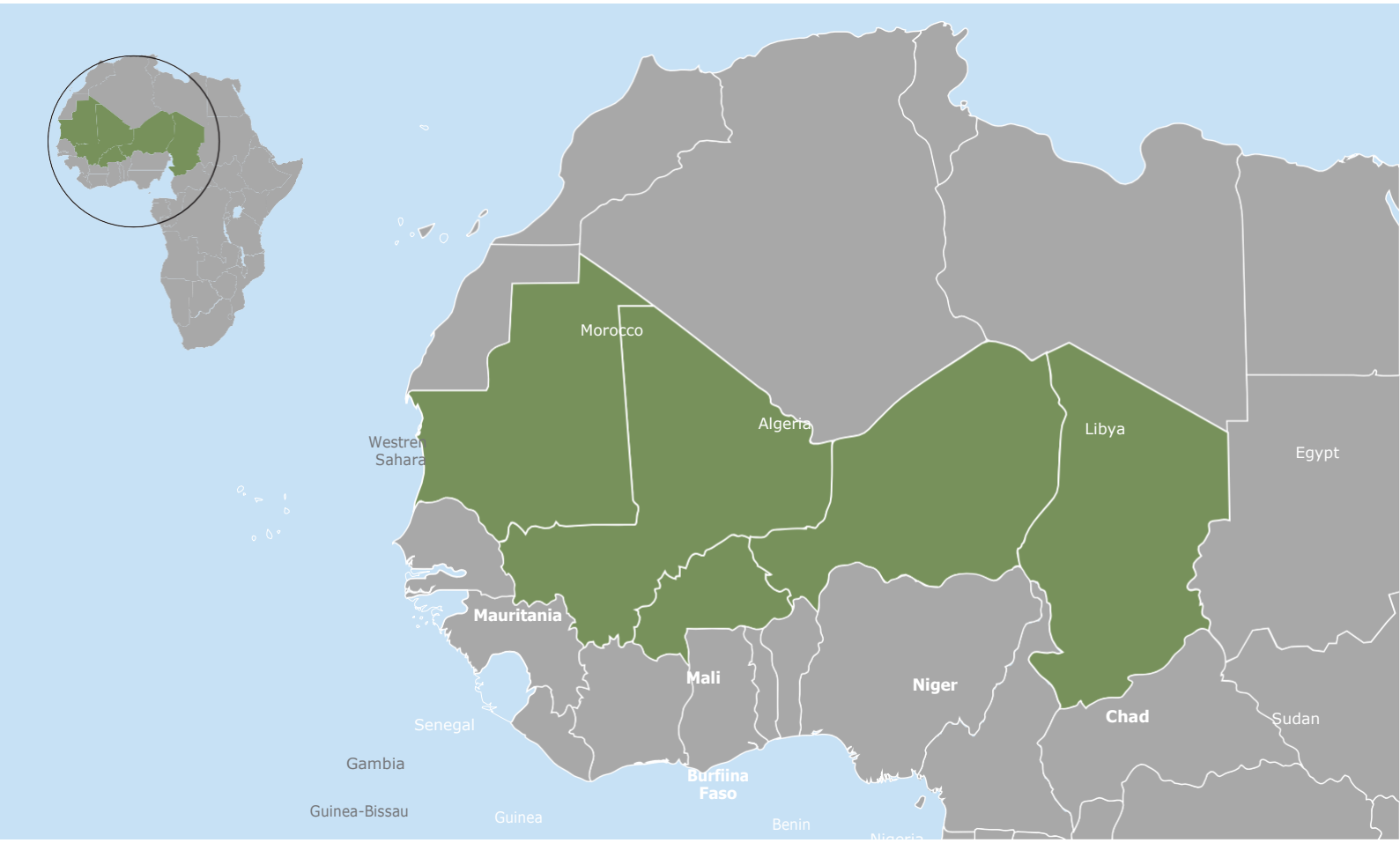

Western Sahel.

Source: https://.issafirica.s3.amazonaws.com/site/uploads/war-25-1.pdfi

डॉ. गौरी नारायण माथुर

आप सभी को नमस्कार। आज- *निर्णायक मोड़ पर साहेल क्षेत्र की राजनीति: शासन और सुरक्षा की चुनौतियां*, विषय पर हमारे साथ पैनल चर्चा में शामिल होने के लिए आप सभी का धन्यवाद। आज हमारे साथ हैं, हैदराबाद विश्वविद्यालय के सहायक प्रोफेसर डॉ. एस. शाजी, जो हमसे ऑनलाइन जुड़ेंगे, डॉ. मौशुमि बासु, एसोसिएट प्रोफेसर- स्कूल ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज़ (जेएनयू) और डॉ. निवेदिता रे, निदेशक अनुसंधान, आईसीडब्ल्यूए, हैं।

अब मैं अध्यक्ष, राजदूत विजय ठाकुर सिंह, महानिदेशक, आईसीडब्ल्यूए से अपनी प्रारंभिक टिप्पणी देने का अनुरोध करूँगी।

राजदूत विजय ठाकुर सिंह

नमस्कार, और आप सभी का हार्दिक स्वागत है। मैं, साहेल पर इस पैनल चर्चा का हिस्सा बनने वाले पैनल के सभी सदस्यों- डॉ. शाजी, डॉ. मौशुमि बासु और डॉ. निवेदिता रे, को धन्यवाद देती हूँ। हमने साहेल को इसलिए चुना क्योंकि इसका भौगोलिक विस्तार अफ़्रीका के एक छोर से दूसरी छोर तक फैला हुआ है, जहाँ से दोनों ओर जलस्रोत दिखाई देते हैं, एक ओर अटलांटिक महासागर और दूसरी ओर लाल सागर; और संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटेरेस के अनुसार, "साहेल एक क्षेत्र में एकत्रित होने वाले व्यापक वैश्विक जोखिमों का सूक्ष्म संसार है।" अब यह एक बहुत ही उपयुक्त व्याख्या है क्योंकि साहेल क्षेत्र में बहुत सारे कारक हैं जिन्हें एक महत्वपूर्ण नज़रिए से देखने की जरूरत है। निश्चित रूप से, एक, राजनीतिक अनिश्चितता और सैन्य तख्तापलट है। दूसरा है नागरिक संघर्ष। फिर आतंकवादी समूहों की उपस्थिति भी बढ़ रही है। यह क्षेत्र में व्यापक गरीबी और भुखमरी के साथ विकास की कमी को दर्शाता है। यह क्षेत्र जलवायु परिवर्तन के विनाशकारी प्रभाव का साक्षी बन रहा है। सहेलियन लोगों में यह भावना भी जड़ होती जा रही है कि अन्य देशों द्वारा उनके प्राकृतिक संसाधनों का शोषण किया गया है।

इस क्षेत्र के चारों तरफ से भूमि से घिरे तीन देश- माली, बुर्किना फासो और नाइज़र- ये तीनों ही देश सोना और यूरेनियम समेत प्राकृतिक संसाधनों से भरे-पूरे हैं, और यहां सैन्य तख्तापलट हुआ है। अब इन तीनों देशों ने मिल कर एक नई परंपरा शुरू की है। इन्होंने जो पहला कदम उठाया वह यह है कि, इन्होंने अपना स्वयं का गठबंधन- एसोसिएशन ऑफ साहेल स्टेट्स, की स्थापना की। यह एक प्रकार का सुरक्षा समझौता है, कि अगर इनमें से किसी भी एक देश पर हमला होता है तो तीनों देश मिल कर जवाबी कार्रवाई करेंगे।

दूसरा है, ईसीओडब्ल्यूएएस (ECOWAS) से इनका बाहर निकल जाना। मेरे कहने का मतलब है, ईसीओडब्ल्यूएएस (ECOWAS) ने इन पर कुछ प्रतिबंध लगाए थे लेकिन वे ईसीओडब्ल्यूएएस (ECOWAS) से बाहर निकल गए, जिससे यह सवाल सामने आया कि इस प्रकार के क्षेत्रीय मंच भविष्य में क्या आकार लेंगे। तो यह फिर कुछ ऐसा मामला है जिस पर और उसके प्रभावों पर विचार करने की जरूरत है। क्या यह केवल उस विशेष क्षेत्र में महसूस किया जा रहा है या यह अफ्रीका के अन्य क्षेत्रीय, उप- क्षेत्रीय निकायों को भी प्रभावित कर सकता है? तो, यह एक दूसरा पहलू है, मुझे आशा है कि पैनल के सदस्य इस पर विचार करेंगे। और फिर निःसंदेह इन देशों के मौद्रिक संघ से बाहर होने और सीएफए, जो पश्चिमी अफ्रीकी फ्रैंक है, से भी बाहर होने की संभावना पर विचार किया जाना चाहिए। यदि वे मुद्रा विकल्पों से बाहर निकलते हैं तो आप वहाँ एक पूरी तरह से नई स्थिति विकसित होते हुए देखेंगे, और इसके बड़े निहितार्थ होंगे।

अब आतंकवाद की बात करते हैं, कुछ रिपोर्टों में इस बात का जिक्र है कि साहेल वास्तव में आतंकवाद का केंद्र हैं, जहाँ आपके पास चरमपंथी समूह, इस्लामिक जिहादी हैं जो स्थानीय संगठित आपराधिक गिरोहों से जुड़े हैं और यह तथ्य परेशान करने वाला है क्योंकि यह इन देशों के आम नागरिकों के दैनिक जीवन को प्रभावित करता है।
यह क्षेत्र सूखे से जूझ रहा है। एक रिपोर्ट के अनुसार चाड झील साहेल क्षेत्र की जीवनरेखा है और इसकी 90% सतह सूख चुकी है। इसका इस क्षेत्र पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा।

एक अन्य परंपरा नव-उपनिवेशवाद के खिलाफ इन तीन देशों की तिगड़ी के विवाद के बारे में है। अब तक, इस क्षेत्र में पश्चिमी देशों और फ्रांस को प्रभाव को कम होते देखा जा रहा था। हालाँकि, पश्चिमी देश स्थिति को सुधारने की कोशिश करने के लिए इस क्षेत्र के साथ जुड़े रहना महत्वपूर्ण समझते हैं। पिछले ही सप्ताह हमने आईसीडब्ल्यूए में साहेल के लिए यूरोपीय संघ के विशेष प्रतिनिधि हमारे यहाँ आए थे। इस क्षेत्र में वैगनर ग्रुप, जो क्षेत्र में अच्छा दबदबा रखता है, के जरिए रूस का प्रभाव बढ़ रहा है। हम चीन को भी नज़रअंदाज़ नहीं कर सकते क्योंकि चीन उस क्षेत्र पर अपने

रणनीतिक संसाधनों के लिए और विशेष रूप से मॉरीतानिया में इस्तेमाल किए जा सकने वाले स्थनों पर नज़र रख रहा है।

आज हम निर्णायक मोड़ पर पहुँच चुके सहेलियन राजनीति और इन देशों में भविष्य की शासन एवं सुरक्षा संबंधी चुनौतियों पर ही चर्चा नहीं करेंगे बल्कि इस क्षेत्र से परे इसके प्रभावों पर भी विचार करेंगे।

इन्हीं बातों के साथ, मैं, हैदराबाद विश्वविद्यालय के राजनीति विज्ञान विभाग में कार्यरत सहायक प्रोफेसर डॉ. शाजी सदासिवन को अपने विचार रखने के लिए आमंत्रित करना चाहूँगी। मैं पैनल के प्रत्येक सदस्य को लगभग 10 से 12 मिनटों का समय दूँगी और उसके बाद, हम प्रश्नों के उत्तर देंगे एवं पैनल के सदस्य दूसरे सदस्यों के विचार पर टिप्पणी कर सकते हैं।

डॉ. शाजी सदासिवन

माननीय अध्यक्ष, आईसीडब्ल्यूए की महानिदेशक, राजदूत विजय ठाकुर सिंह, पैनल के साथी सदस्यों और अन्य प्रतिभागियों। साहेल क्षेत्र पर इस महत्वपूर्ण पैनल चर्चा का हिस्सा बनना मेरे लिए सम्मान और सौभाग्य, दोनों ही की बात है। मैं इस चर्चा का हिस्सा बनने के निमंत्रण हेतु आईसीडब्ल्यूए का धन्यवाद करना चाहता हूँ।

मैं इस समय साहेल क्षेत्र की राजनीति से संबंधित कुछ बातों पर प्रकाश डालना चाहूँगा। साहेल निश्चित रूप से एक चौराहे पर खड़ा है। साहेल की राजनीति और अर्थव्यवस्था हाल के दिनों में अफ़्रीकी राजनीति और विकास में सबसे अधिक बहस वाले विषयों में से एक रहा है। साहेल क्षेत्र के बारे में अधिकांश चर्चाएँ इस ओर इशारा करती हैं कि इस क्षेत्र में कुछ हद तक संकट हैं; और ये संकट है- राजनीतिक, आर्थिक एवं पर्यावरणीय। साहेल अफ़्रीका का एक विशाल क्षेत्र है और संयुक्त राष्ट्र के आकलन के अनुसार, इस क्षेत्र में 10 देश हैं, जो पश्चिम क्षेत्र में सेनेगल से लेकर पूर्व में दक्षिण सूडान तक फैले हैं। यह अफ़्रीकी महाद्वीप में उप-सहारा राज्यों एवं उत्तरी अफ़्रीका के बीच का एक क्षेत्र है।

आज इस क्षेत्र में कई कारणों से गंभीर स्तर पर प्रवासन हो रहा है। यही एक कारण है कि आज इस क्षेत्र पर व्यापक रूप से ध्यान दिया जाता है। शायद जातीयता, राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता, आर्थिक एवं पर्यावरण संबंधी संकट जैसे कई मुद्दों से उत्पन्न संघर्ष ने प्रवासन को गति दी है जो इस क्षेत्र पर पूरी दुनिया का ध्यान खींचने में योगदान देता है।

दरअसर, हाल में किए गए अध्ययनों में से एक अध्ययन से पता चलता है कि पिछले कुछ वर्षों में साहेल क्षेत्र से 55 लाख (5.5 मिलियन) लोग विस्थापित हुए हैं।

राजनीतिक क्षेत्र में, कुछ हद तक लोकतंत्र का ह्रास हुआ है। उदाहण के लिए, इस क्षेत्र में बीते तीन से चार वर्षों में आठ बड़े और सफल सैन्य तख्तापलट हुए हैं। गैर-परंपरागत खतरों के दायरे में, आतंकवाद का स्तर भी बढ़ा है, जिसने वास्तव में इस क्षेत्र के लगभग सभी प्रमुख देशों को प्रभावित किया है। जमात नुसरत इस्लाम वल मुस्लिमीन (जेएनआईएम/JNIM) और इस्लामिक स्टेट इन ग्रेटर सहारा (आईएसजीएस/ISGS) जैसे हिंसक चरमपंथी समूहों ने अपनी गतिविधियाँ बढ़ा दी हैं। आंकड़ों से पता चलता है कि पिछले वर्ष इस क्षेत्र में चरमपंथ संबंधी हिंसा के कारण मृत्युदर में 50% की वृद्धि हुई है। इसलिए, साहेल की स्थिति इस दिशा की ओर इशारा करती है कि इस क्षेत्र को प्रभावित करने वाले परंपरागत और गैर- परंपरागत, दोनों खतरे हैं। इसने लोगों के जीवन को प्रभावित किया है, जिसमें उनकी राजनीतिक स्वतंत्रता और निश्चित रूप से आर्थिक पहलू, आजीविका भी शामिल हैं। राजनीतिक रूप से देखा जाए तो साहेल क्षेत्र में हुए सैन्य तख्तापलट और उससे उपजे नेतृत्व वास्तव में व्यवस्था के भीतर ही अपनी पैठ बनाते जा रहे हैं। हो सकता है, कुछ मामलों में, हाल के दिनों में सत्ता में आए इस प्रकार के सैन्य शासनों को कुछ लोकप्रिय समर्थन प्राप्त हो। यह अलग- अलग प्रकार के कारणों से हो सकता है।

इस बात पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए कि उग्रवाद, जो साहेल क्षेत्र के लगभग सभी देशों को प्रभावित कर रहा है, की, एक अंतरराष्ट्रीय पहचान भी है। वास्तव में, साहेल क्षेत्र में राष्ट्रीय सीमाओं को पार करते हुए, आतंकवादी समूहों से जुड़े विभिन्न प्रकार के गठबंधन हैं। शायद, यह एशिया क्षेत्र के कई अन्य स्थानों के उलट ढीला-ढ़ाला गठबंधन (आतंकवादियों का) है। हालाँकि, इन ढीले गठबंधनों में अपनी तरह की आंतरिक सुसंगतता भी है जो क्षेत्र में लोगों के साथ- साथ सरकारों के लिए भी कई प्रकार की समस्याएं पैदा कर रही है।

इन संघर्षों के बारे में एक और महत्वपूर्ण पहलू यह है कि, इनमें से कुछ पारंपरिक प्रकार के संघर्ष हैं जिनमें सेना और सरकारी तंत्र दोनों शामिल हैं जबकि अन्य दूसरे प्रकार के गैर- पारंपरिक विवदा भी हैं। जैसे- खाद्य वितरण और आजीविका से संबंधित मामले। हाल के दिनों में आईएमएफ के कुछ आंकड़ों पर नज़र डालें तो स्पष्ट रूप से पता चलता है कि साहेल क्षेत्र खाद्य असुरक्षा के मामले में सबसे अधिक प्रभावित क्षेत्रों में से एक है क्योंकि इस क्षेत्र में लगभग 60 लाख (6 मिलियन) लोग खाद्य असुरक्षा से बहुत अधिक प्रभावित हैं। यह विशेष मुद्दा वास्तव में यूक्रेन- रूस युद्ध के कारण और भी जटिल हो गया है। क्योंकि विशेषरूप से यूक्रेन से बड़े पैमाने पर खाद्य आयात (खासतौर पर गेहूँ जैसे अनाज) पर गहरा असर पड़ा है। इससे अफ़्रीकी देश बड़े पैमाने पर प्रभावित हुए हैं और साहेल क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं है। साहेल- बुर्किना फासो, चाड, माली, मॉरीतानिया और नाइज़र में जी5 राष्ट्र में खाद्य असुरक्षा की दर सबसे अधिक है (करीब 1 करोड़ 2 लाख/10.2 मिलियन लोग)। इसी तरह साहेल क्षेत्र को पारिस्थितिक रूप से बेहद नाज़ुक क्षेत्र बताया गया है। इस क्षेत्र की अधिकांश कृषि जलवायु के प्रति संवेदनशील फसलों पर निर्भर करती है और हाल के दिनों में पड़े सूखे ने खाद्य उत्पादन को बहुत अधिक प्रभावित किया है जिसके कारण वास्तव में लोगों को अन्य स्थानों पर पलायन करना पड़ा है। कुछ मामलों में, पर्याप्त खाद्य संसाधनों की कमी के कारण कुछ विशेष प्रकार के विवाद और हिंसा भी हुई है।

एक तरह से, परंपरागत संघर्ष गैर- परंपरागत संघर्षों को जन्म दे रहे हैं और गैर- परंपरागत संघर्ष कभी- कभी परंपरागत संघर्षों की वजह बन रहे हैं। इसलिए, साहेल क्षेत्र में संघर्षों के विभिन्न रूपों के बीच कुछ प्रकार की सूक्ष्म गतिशीलता है। यह एक दिलचस्प स्थिति है क्योंकि अधिकांश दूसरे अफ़्रीकी क्षेत्रों में, मुद्दों की इस प्रकार की अंतर्संबंधता दिखाई नहीं दे सकती है या इस प्रकार की आंतरिक गतिशीलता नज़र नहीं आ सकती है। उस अर्थ में, साहेल क्षेत्र, जो महाद्वीप में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है, आने वाले वर्षों और दशकों में अफ़्रीका की राजनीति को महत्वपूर्ण तरीके से परिभाषित करने जा रहा है।

एक और महत्वपूर्ण बात जिस पर मैं अपने विचार रखना चाहूँगा, वह है इस क्षेत्र में जलवायु संबंधी संकट। वास्तव में इस क्षेत्र में अधिकांश विवाद दो महत्वपूर्ण उपक्षेत्रों को लेकर है और इनमें से एक है चाड झील घाटी। साहेल क्षेत्र में ये दो महत्वपूर्ण उप-क्षेत्र हैं जो इस क्षेत्र में विवाद का केंद्र बन गए हैं और इस क्षेत्र में जलवायु संकट को बहुत महत्व दिया जा रहा है। दरअसल, एक अध्ययन से पता चलता है कि साहेल क्षेत्र के तापमान में औसतन 1.5 डिग्री सेल्सियस की वृद्धि हुई है जिसने फसल के पैटर्न और लोगों के जीवन पर गहरा प्रभाव डाला है। इसलिए, उस अर्थ में हमें साहेल क्षेत्र में जो मुद्दे मिलते हैं वे बहुत विशिष्ट हैं।

अब, सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इस प्रकार के संकट के संभावित कारण क्या हो सकते हैं? परंपरागत साहित्य पश्चिम ताकतों की भागीदारी की ओर इशारा करेगा, उदाहरण के लिए, फ्रांस की भूमिका। कुछ विद्वान जातीय- राजनीति और उस जैसे मुद्दों पर ध्यान दिलाएंगे। ऐसे अन्य कारण भी हैं जो क्षेत्र में शासन और सार्वजनिक नीति प्रबंधन से जुड़े हैं। बहुत लंबे समय से, कई क्षेत्रीय संगठन और प्रमुख देशों ने साहेल क्षेत्र में शासन तंत्र का समर्थन करने में बहुत योगदान दिया है। हालाँकि, इन संगठनों की भागीदारी में एक निश्चित प्रकार की कमी आई है, जैसा कि अध्यक्ष जी ने बाताया, कई देशों ने ईसीओडब्ल्यूएएस (ECOWAS) की वापसी या कई देशों की ईसीओडब्ल्यूएएस (ECOWAS) से वापसी ने क्षेत्र में अंतर- सरकारी संगठनों की भूमिका को बहुत अधिक प्रभावित किया है। इसलिए, कुछ हद तक शासन पर संकट बना हुआ है जो बाहरी और आंतरिक दोनों मोर्चों से उत्पन्न होने वाले कई कारकों की वजह से है।

बाहरी कारण की वजह से प्रमुख शक्तियों और अंतर सरकारी संगठनों एवं उप- क्षेत्रीय संगठनों की वापसी हो सकती है। आंतरिक कारक निश्चित रूप से लोगों की धारणा और क्षेत्र में निर्वाचित सरकारों से संबंधित क्षमता के मुद्दों पर केंद्रित है।

सेवा वितरण एक बड़ी समस्या है जिसका सामाना क्षेत्र की अधिकांश सहेलियन सरकारों को करना पड़ रहा है। ऐसे भी कारण हैं जो इन देशों के भीतर गैर-राजकीय कारकों की भूमिका से जुड़े हैं, उदाहरण के लिए, चरमपंथी समूह। कभी-कभी इन चरमपंथी समूहों के साथ बातचीत भी समस्याओं का कारण बन रही है क्योंकि विचारों/स्पष्टता की कमी है, आप जानते हैं, कि वे किन उद्देश्यों को पूरा करना चाहते हैं। इससे बहुत सारे दूसरे मुद्दे भी पैदा होते हैं क्योंकि सहेलियन संदर्भ में संगठनों के मामलों में मध्यस्थता बहुत कठिन हो जाती है। और हाल के दिनों में विशेष रूप से अफ़्रीकी संघ और ईसीओडब्ल्यूएएस (ECOWAS) के हस्तक्षेप की विफलता पर बहुत सारे उदाहरण उद्घृत किए गए हैं।

इसलिए, मैं जिस बात पर ज़ोर देने की कोशिश कर रहा हूँ वह यह है कि परंपरागत और गैर- परंपरागत दोनों प्रकार की सुरक्षा चुनौतियाँ इस क्षेत्र को बहुत अधिक प्रभावित कर रही हैं। इन दो श्रेणियों के मुद्दों में बहुत बारीक अंतर है। वास्तव में निकट भविष्य में कोई स्पष्ट समाधान न होने के कारण, परिणाम, कुछ समय तक लगातार हिंसक गतिविधियों की स्थिति का बने रहना है। मैं अपनी बात यहीं समाप्त करना चाहूँगा। आप सभी का बहुत- बहुत धन्यवाद।

राजदूत विजय ठाकुर सिंह

प्रोफेसर शाजी सदासिवन, आपका बहुत- बहुत धन्यवाद। अब मैं डॉ. मौशुमि बासु को अपनी प्रस्तुति देने के लिए आमंत्रित करूँगी।

डॉ. मौशुमि बासु

मुझे भारतीय वैश्विक परिषद को धन्यवाद देना चाहिए क्योंकि भारत में अंतरराष्ट्रीय संबंधों पर मुख्यधारा के संवादों में अफ़्रीका के विकास को प्रतिबिंबित करना बहुत दुर्लभ है।

मुझे लगता है कि सहेल की राजनीति पर संवाद के आयोजन जैसे छोटे- छोटे कदम हैं जो हमें ग्लोबल साउथ के देशों के सामने आने वाले मुद्दों की विवधता की बहेतर समझ प्रदान करने में मदद करेंगे। जब अफ़्रीका की बात आती है तो हमारे पर इस विशाल महाद्वीप, जिसमें 54 देश हैं, के बारे में बहुत कम जानकारी हैं। यदि आप अफ़्रीका के मानचित्र को देखेंगे, तो साहेल एक ऐसा क्षेत्र है जो उत्तर में शुष्क रेतीले सहारा से लेकर दक्षिण में तटीय अफ़्रीका के उष्णकटिबंधीय वन क्षेत्रों के बीच स्थित है।

आज की अपनी प्रस्तुति में, मैं दो या तीन मुख्य मुद्दों पर बात करना चाहूँगी जो एक- दूसरे से जुड़े हुए हैं और फिर उनसे संबंधित प्रश्नों का उत्तर दूंगी। मैं सबसे पहले साहेल नाम के इस विशाल भू- भाग पर ध्यान केंद्रित करते हुए चर्चा को शुरू करना चाहूँगी।यह कैसा दिखता है और 100 साल पहले यह कैसा दिखता था? एक क्षेत्र के रूप में साहेल में परंपरागत रूप से कम घनी वनस्पति थी- यहाँ मुख्य रूप से सूखे घास के मैदान और कंटीली झाड़ियां हुआ करती थीं। यदि आप कुछ किए गए अध्ययनों पर विचार करें तो आप समय के साथ साहेल क्षेत्र के बदलते परिदृश्य के बारे में उचित अंदाज़ा लगा सकेंगे। एक बहुत ही दिलचस्प स्रोत है जिसे मैं आप सब के साथ साझा करना चाहूँगी, जिसका शीर्षक है, साहेलः एटलस ऑफ चैंजिंग लैंडस्केप, जिसे 2012 में संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम द्वारा प्रकाशित किया गया था। मैं वास्तव में अनुशंसा करूँगी कि आप इसे नीचे दिए लिंक पर जा कर पढ़ें (https://www.unep.org/resources/report/sahel- atlas-changing-landscapes-tracing-trends-and-variations- vegetation-cover-and), क्योंकि रिपोर्ट समय- समय पर कई पैमानों पर साहेल क्षेत्र का सचित्र समीक्षा प्रदान करने के लिए रिमोट सेंसिंग एप्लीकेशंस का उपयोग करती है। यह दर्शाता है कि वनस्पति, खेती का क्षेत्र कैसा था, बारिश और भूमि क्षरण संबंधी आंकड़े आदि भी बताती है। इसलिए, साहेल में, हमारे पास एक प्रकार का संकट है जो भूमि के प्रश्न से शुरू होता है।

अब, दुर्भाग्य से, यह अफ़्रीका की भी एक बड़ी कहानी है। अफ़्रीका के मानचित्र पर देशों के बीच खींची गई सीधी रेखाएं यूरोप में हुई बातचीत और सीमाएं एवं सरहदें चिन्हित करने की याद दिलाती हैं, जहाँ स्थानीय समुदाय को कुछ भी कहने का कोई अधिकार नहीं था। हालाँकि, ये देश आज़ाद हैं लेकिन मुझे लगता है कि हम अफ़्रीका में अभी भी चल रही औपनिवेशिक परियोजनाओं पर अपनी आँखें नहीं मूंद सकते। तो, नव- उपनिवेशवाद बहुत व्याप्त है। सिर्फ जमीन के ऊपर उगने वाली चीजें ही नहीं बल्कि ज़मीन के भीतर छुपा ख़जाना भी है जो इस क्षेत्र के बाहर के देशों को यहाँ आने और अवसर का लाभ उठाने के लिए आकर्षित करता है। साहेल क्षेत्र तेल, सोना और यूरेनियम का महत्वपूर्ण भंडार है, लेकिन इनसे होने वाले आर्थिक लाभ गरीब जनता को नहीं मिल रहे हैं। वैश्विक बहुआयामी गरीबी सूचकांक पर यूएनडीपी की 2023 की रिपोर्ट में

माली में गरीबी का आंकड़ा 54%, बुर्किना फासो में 86% और नाइज़र में 90% है।

इसलिए, कई मायनों में, साहेल क्षेत्र उस संसाधन अभिशाप को दर्शाता है। मुझे स्पष्ट रूप से याद है कि जब हम बड़े हो रहे थे तो इस क्षेत्र से जो तस्वीरें आ रही थीं वे लगातार सूखे से संबंधित थीं और तथ्य यह है कि इतने दशकों के बाद भी हालात अच्छे नहीं हुए हैं। कुछ लोग कह सकते हैं कि स्थिति में सुधार हुआ है लेकिन हालात का कुल लेखा-जोखा देखें तो स्थिति और खराब ही हुई है। इसलिए, जब हम ग्लोबल साउथ के बारे में बात करते हैं, तो मुझे लगता है कि हमारे लिए यह समझना बहुत महत्वपूर्ण है कि इसका वास्तव में क्या मतलब है। आम लोगों के लिए विकास के क्या मायने हैं? उन देशों के लिए इसका क्या अर्थ है जो एक दूसरे के साथ सौदेबाज़ी से लाभ उठाना चाहते हैं?

मेरा अगला मुद्दा साहेल में शासन संरचना के बारे में है। निःसंदेह, इन देशों का अतीत औपनिवेशिक है, जिनकी अपनी शासन संरचनाएं थीं। इनमें से ज्यादातर देश स्वतंत्र हो चुके हैं और लोकतंत्र, सैन्य तख्तापलट आदि के उतार-चढ़ाव भरे समय से गुज़रे हैं। अफ़्रीका के मामले में, सबसे दिलचस्प बात यह है कि पूरे अफ़्रीका का ज़ोर क्षेत्रीय संगठनों को बनाने पर है। इसलिए, महाद्वीप स्तर पर अफ़्रीका एकता संगठन जो अब अफ़्रीकी संघ (अफ़्रीकन यूनियन) बन गया है, था, लेकिन उप- क्षेत्रीय संगठन बनाने का भी काम हुआ जिसका सबसे अच्छा उदाहरण ईसीओडब्ल्यूएएस (ECOWAS) है।

इसलिए, अफ़्रीका में शासन संरचनाएं अधिक विविधतापूर्ण हैं। अलग- अलग देशों के अलावा, आपके पास अफ़्रीकी संघ (एयू) और बड़ी संख्या में उप-क्षेत्रीय संगठन हैं जो समग्र शासन व्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। यह बहुत दिलचस्प है कि, जब आप दक्षिण एशिया से तुलना करते हैं तो आप पाते हैं कि दक्षिण एशिया के लोग अभी भी सार्क के क्रियाशील न होने के कारण परेशान हैं, वहीं एक ऐसा महाद्वीप भी है, जो अपेक्षाकृत गरीब है फिर भी कम- से- कम विविधताओं से भरी शासन संरचनाएं बनाने में सफल रहा है।

यदि मैं आर्थिक प्रशासन के मुद्दों पर विचार करूँ तो निःसंदेह दायरा बढ़ जाता है। आपके पास आईएमएफ जैसे अंतरराष्ट्रीय संगठन आ रहे हैं। ये देश आईएमएफ के मुख्य ग्राहक देश हैं। आईएमएफ से ऋण तभी दिया जाता है जब कोई देश भुगतान संबंधी समस्या का सामना कर रहा हो। मैंने सिर्फ बुर्किना फासो, माली और नाइज़र पर ध्यान केंद्रित किया और आंकड़े बताते हैं कि इन सभी ने 1991 से 2023 के बीच लगभग 11 से 12 बैक- टू- बैक लेंडिंग ऑपरेशंस किए हैं।

ये लेंडिंग क्रेडिट प्रोग्राम्स तीन वर्ष की अवधि के लिए थे। तो, आपके पास 1991 शुरू होने वाला एक क्रेडिट प्रोग्राम होगा, जो संभवतः 1994 में खत्म होगा और 1994 में ही, कुछ महीनों के बाद, आगामी तीन वर्षों के लिए एक और क्रेडिट (उधार) के लिए अनुबंध कर लिया जाता है। तो, ये ऐसे ऋण हैं जिन्हें इन सरकारों को चुकाना होगा। इसलिए, कर्ज़ का बड़ा मुद्दा शासन व्यवस्था पर भी सवाल उठाता है- ये सरकारें विकास के लिए क्या अच्छा है और क्या बुरा, कैसे तय करती हैं?

यह अध्ययन का बहुत ही आकर्षक क्षेत्र है जो इस मुद्दे पर गौर करता है कि- इस तरह के फैसले कौन करता है या इन देशों पर कौन शासन कर रहा है? बीते कुछ महीनों से, इस क्षेत्र में कई सैन्य तख्तापलट हुए हैं, हालाँकि, ज़मीनी स्तर पर जानकारी की कमी है। हम या तो अलग- अलग स्रोतों से निकलने वाले समाचार पत्रों पर निर्भर हैं, जो यह दिखाना चाहते हैं कि सैन्य तख्तापलट को निश्चित लोकप्रिय समर्थन प्राप्त है। इस बात की और जाँच होनी चाहिए कि आखिर वे कौन लोग हैं जो इन देशों को चला रहे हैं? इस क्षेत्र में सैन्य तानाशाही के लिए लोकप्रिय समर्थन क्या बताता है? बढ़ती फ्रांसीसी विरोधी भावना, इस क्षेत्र में फ्रांस की ऐतिहासिक भागीदारी और उससे उत्पन्न होने वाली भावनाओं के बारे में क्या कहना है? इसलिए, मुझे लगता है कि सहेलियन समस्या से निपटने के लिए कई छोटी- छोटी बातें हैं, जिन पर वास्तव में हमें अधिक ध्यान देना चाहिए क्योंकि ये सभी पहलू सहेल में जो हो रहा है उससे जुड़ी हुई हैं।

यह मुझे एक और संबंधित मुद्दे पर गौर करने को विवश करता है। यदि आप सहेल में काम करने वाले अंतरराष्ट्रीय संगठनों की संख्या और विशेष रूप से, युद्ध की स्थितियों में काम करने वाले संगठनों- संयुक्त राष्ट्र शांति मिशन, पर गौर करें।

इसके अलावा, यहां ईसीओडब्ल्यूएएस (ECOWAS,), अफ़्रीकन यूनियन सहेल स्ट्रैटेजी, जी5 सहेल, ज्वाइंट मिलिट्री स्टाफ कमिटि ऑफ द सहेल फ्यूज़न एंड लैज़ान यूनिट और सहेल सिक्योरिटी यूनिट ऑफ द यूरोपियन यूनियन, हैं। इतने सारे संगठन हैं जो सिर्फ सुरक्षा के मुद्दे पर काम कर रहे हैं। अब, सवाल यह उठता है कि, इन संगठनों के बीच सहयोग की प्रकृति क्या है?

प्रतिरूपण की सीमा क्या है? क्या एजेंसियों के बीच प्रतिस्पर्धा जैसा कुछ है? यह एक और क्षेत्र है जिस पर अधिक अध्ययन करने की जरूरत है। इसके अलावा, अब केवल अंतरसरकारी संगठन ही नहीं हैं लेकिन भाड़े के सैनिक भी हैं जो इस क्षेत्र में रहे हैं। शायद वे पहले भी थे लेकिन अब वे अधिक संगठित रूप में हैं जैसे कि वर्तमान विवाद में रूसियों की भागीदारी। इसलिए, सुरक्षा की दृष्टि से भी बहुत कुछ हो रहा है। इसके अलावा, बोको हराम, आईएसआईएस, अल-कायदा जैसे कई सशस्त्र इस्लामी आतंकवादी समूह भी हैं।

अब, यहाँ बैठे हुए, हमें कैसे पता चलेगा कि वहाँ के लोग वास्तव में चाहते क्या हैं? जानकारी प्राप्त करने के लिए हम किस पर भरोसा करते हैं? क्या हमारे पास वास्तव में इस प्रकार की कहानियां, जिनके बारे में मैंने पहले बात की थी, देने के लिए पर्याप्त समय है।

मैं, चार सवालों के साथ अपनी बात खत्म करने जा रही हूँ। पहला सवाल, संपूर्ण- अफ़्रीकीवाद का भविष्य क्या है- विशेष रूप से ईसीओडब्ल्यूएएस(ECOWA) जैसी संस्थाओं के लिए। तीन देशों- बुर्किना फासो, माली और नाइज़र, ईसीओडब्ल्यूएएस (ECOWAS) के संस्थापक सदस्य थे लेकिन आज उन्होंने संगठन से बाहर निकलने की इच्छा जाहिर की है। तो, उस संपूर्ण- अफ़्रीकी परियोजना का क्या होने वाला है?

दूसरा, निःसंदेह, नव-उपनिवेशवाद का बड़ा मुद्दा है, जिस पर वास्तव में अधिक विस्तार के साथ विचार करने की आवश्यकता है, चाहे वह सैन्य शासन हो या लोकतंत्र, कौन निर्धारित करेगा कि अर्थव्यवस्थाएं और उससे संबंधित निर्णय कैसे लिए जाएंगे? वैश्वीकरण प्रत्यक्ष विदेशी निवेशकों को एक निश्चित वैधता देता है तो क्या विकास के नाम पर भूमि समेत

संसाधन बहुराष्ट्रीय कंपनियों को सौंपे जाते रहेंगे, इस पर बहुत गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता है।

तीसरा, इन सभी विवादों में बहुआयामीता का पहलू भी है। शाजी ने जिस बात का जिक्र किया- इन विवादों के कारण अलग- अलग समुदाय के लोग किस प्रकार प्रभावित होंगे, किस प्रकार अन्य लोगों में कुछ लोग सबसे अधिक प्रभावित होते रहते हैं? एक क्षेत्र के रूप में सहेल, जो संघर्ष से गुज़र रहा है, यह उसी क्षेत्र के अन्य लोगों को कैसे प्रभावित करता है? टोगो जैसे कुछ देश, सहेल की राजनीति में वार्ताकार के रूप में उभरे हैं। इसलिए, कुछ ऐसे देश हैं जो इस संघर्ष की स्थिति में मध्यस्थता करने का दावा कर रहे हैं लेकिन क्षेत्र के बाहर के मध्यस्थों का क्या?

आखिर में, क्षेत्रीय समस्याओं के क्षेत्रीय समाधान का यह पूरा प्रश्न, जिसके लिए अफ़्रीका खड़ा था, आज उसी अवधारणा को किस प्रकार चुनौती दी जा रही है? धन्यवाद।

राजदूत विजय ठाकुर सिंह

प्रो. मौशुमि बासु, आपका बहुत- बहुत धन्यवाद। आपने कुछ प्रमुख मुद्दों पर बात की। एक तो यह है कि, हमें भारत में रहते हुए ही अफ़्रीका पर विचारक समूह, विश्लेषक और विद्वान के रूप मेंऔर अधिक विस्तार से अध्ययन करने की आवश्यकता है। हमें इसे और अधिक समझने की जरूरत है, इसलिए मैं आपसे पूरी तरह से सहमत हूँ। जब मैं आपकी बात सुन रही थी, तो मैं अफगानिस्तान के बारे में सोचने लगी। आपने जो कुछ मुद्दे उठाए वास्तव में वे मुद्दे अफगानिस्तान के संदर्भ में भी उठाए गए थे। वहाँ भी बहुत सारी एजेंसियां हैं और क्या वे एक साथ मिलकर अच्छी तरह से काम कर रही हैं? साहेल क्षेत्र में परंपरागत और गैर- परंपरागत समस्याओं का मिश्रण है, जैसा कि डॉ. शाजी बता रहे थे। आपने कई महत्वपूर्ण सवाल उठाएं हैं, मुझे आशा है कि हमारे विद्वान इन सवालों पर विचार करेंगें और इस पर और विस्तार से अध्ययन करेंगे। अब मैं, भारतीय वैश्विक परिषद में अनुसंधान निदेशक के रूप में सेवाएं दे रहीं डॉ. निवेदिता रे को अपने विचार रखने के लिए आमंत्रित करती हूँ।

डॉ. निवेदिता रे

धन्यवाद, महोदया। मैं जुलाई 2023 में नाइज़र में हुए तख्तापलट के बाद पश्चिमी सहेल क्षेत्र में हुए दो प्रमुक घटनाओं पर ध्यान दिलाने जा रही हूँ। डॉ. मौशुमी ने जहाँ अपनी बात समाप्त की और शुरुआत में डीजी महोदया ने जिस विषय से इस संवाद को शुरू किया, मैं वहीं से अपनी बात शुरू करूँगी यानि क्षेत्रीय समूहों की भूमिका और पश्चिमी सहेल के तीन देशों के

ईसीओडब्ल्यूएएस (ECOWAS) छोड़ने के निहितार्थ। मैं नाइज़र में हुए तख्तापलट को इस क्षेत्र की बहुत महत्वपूर्ण घटना मानती हूँ। आज, हम इस मुद्दे पर चर्चा कर रहे हैं क्योंकि यह क्षेत्र नाइज़र में हुए तख्तापलट के बाद अभूतपूर्व मंथन का गवाह बन रहा है, जिसने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सुर्खियां भी बटोरी हैं।

पहला घटनाक्रम जिस पर मैं चर्चा करने जा रही हूँ वह है माली, बुर्किना फासो और नाइज़र द्वारा पश्चिमी अफ़्रीकी राज्यों के क्षेत्रीय ब्लॉक इकोनॉमिक कम्युनिटी ऑफ वेस्ट अफ़्रीकन स्टेट्स (ईसीओडब्ल्यूएएस/ECOWAS) को छोड़ने की घोषणा। सवाल यह है कि इन तीन देशों का इस गुट से अलग होने का क्या मतलब है? और ईसीओडब्ल्यूएएस (ECOWAS) एवं अफ़्रीका में क्षेत्रीय एकीकरण प्रक्रिया के लिए इसका क्या अर्थ है? दूसरा घटनाक्रम है- क्षेत्र को छोड़ कर जाने के लिए कहे जाने के बाद फ्रांस और पश्चिमी देश के सैनिकों की वापसी और दिसंबर 2023 में क्षेत्रीय आतंकवाद विरोधी बल, फ्रांस समर्थित जी5 सहेल गठबंधन का विघटन। इस घटना का सुरक्षा स्थिति, भू- राजनीति के लिए क्या अर्थ है और इसके आर्थिक पहलू क्या हैं?

इससे पहले कि मैं घटनाक्रम पर चर्चा करूँ, मैं सिर्फ इन तीन देशों- माली, बुर्किना फासो और नाइज़र की पृष्ठभूमि बताकर इस चर्चा को प्रासंगिक बनाना चाहती हूँ। इन देशों को उनकी समानताओं के विश्लेषण की एक इकाई के रूप में माना जा सकता है।

सबसे पहला है भौगोलिक महत्व। ये सभी चारों तरफ से भूमि से घिरे देश हैं और यूरेनियम एवं सोने के भंडार के कारण बहुत अधिक संसाधन संपन्न हैं। इन देशों द्वारा इन दो खनिजों का उत्पादन और निर्यात किया जाता है। नाइज़र विश्व का सातवां सबसे बड़ा यूरेनियम उत्पादक देश है, 2022 में माली विश्व में सोने का 11वां सबसे बड़ा उत्पादक देश था, जबकि बुर्किना फासो 12वां और नाइज़र 27वां सबसे बड़ा उत्पादक देश था। इनकी अर्थव्यवस्था पूरी तरह से इन खनिजों पर निर्भर है।

दूसरा, राजनीतिक रूप से ये बेहद अस्थिर देश हैं, क्योंकि इन देशों में सैन्य तख्तापलट का इतिहास रहा है। उदाहरण के लिए, इस सूची में बुर्किना फासो आज़ादी के बाद आठ सैन्य तख्तापलट के साथ सबसे उपर है जबकि माली और अब नाइज़र में, आज़ादी के बाद से पांच बार सैन्य तख्तापलट हो चुका है।

तीसरा, ये सभी देश, निश्चित रूप से, फ्रेंच भाषी हैं, ये फ्रैंकोफोन अफ़्रीकी देश हैं। ये फ्रांसीसी औपनिवेशिक शासन के अधीन रहे हैं और ब्रिटेन के उलट, फ्रांस ने अपने पूर्व उपनिवेशों के साथ मजबूत संबंध बनाए रखे हैं। इसलिए, अर्थव्यवस्था और सुरक्षा लेकर निवेश और राजनीति तक पर फ्रांस का बहुत गहरा प्रभाव है। आर्थिक रूप से, ये सभी सीएफए फ्रैंक का प्रयोग करते हैं।

चौथा, सुरक्षा के मोर्चे पर वे सभी बढ़ते आतंकवाद की चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। इन सभी देशों में आप इस्लामी चरमपंथी ताकतों का जमावड़ा पाते हैं। उदाहरण के लिए, नाइज़र की सीमा नाइजीरिया से लगा हुआ है, जहां आतंकवादी समूह बोको हराम की मौजूदगी है। नाइज़र की सीमा बुर्किना फासो और माली से भी जुड़ी हुई है और इन देशों में एक्यूआईएम और आईएस के सहयोगी आतंकी संगठनों की मौजूदगी है। तो, ये चार मुद्दे हैं जो इन देशों को एक जैसा बनाते हैं।

इस पृष्ठभूमि को देखते हुए, मैं इन तीन देशों से जुड़े पहले मुद्दे पर चर्चा करने जा रही हूँ। माली, बुर्किना फासो और नाइज़र ने ईसीओडब्ल्यूएएस (ECOWAS) समूह को छोड़ने की घोषणा की है। अब इन तीन देशों के लिए इसका क्या मतलब है? इन देशों के लिए ईसीओडब्ल्यूएएस (ECOWAS) को छोड़ना आसान नहीं होगा। ईसीओडब्ल्यूएएस (ECOWAS) बहुत विकसित एवं अफ़्रीका के सबसे मजबूत क्षेत्रीय समूहों में से एक है। शायद आप जानते होंगे की अफ़्रीकन यूनियन का एक एजेंडा 2063 है जो एकीकृत, समृद्ध, शांतिपूर्ण अफ़्रीका की आकांक्षा रखता है, एक ऐसा अफ़्रीका जो अपने नागरिकों द्वारा शासित हो और गतिशील शक्ति का प्रतिनिधित्व करता हो। एक एकीकृत शांतिपूर्ण और समृद्ध अफ़्रीका के इस विज़न को पूरा करने के लिए, सदस्य देशों के साथ- साथ क्षेत्रीय समुदाय एकीकरण एजेंडा को चलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इस बात पर गौर करना दिलचस्प है कि वे क्षेत्रीय संगठनों के लिए समुदाय शब्द का प्रयोग करते हैं। वे वैश्विक संगठन या समूह शब्द का प्रयोग नहीं करते। समुदाय शब्द का प्रयोग करने से उनका तात्पर्य - लोगों, से है। क्षेत्रीय समूहों का उद्देश्य है- कैसे लोगों को एकीकृत किया जाए। ईसीओडब्ल्यूएएस (ECOWAS) इस मोर्चे पर काफी आगे बढ़ चुका है।

यदि आप अफ़्रीका के अन्य क्षेत्रीय संगठनों से तुलना करेंगे तो पाएंगें कि चाहे वह ईस्ट अफ़्रीका कम्युनिटी (ईएसी/EAC) हो या सदर्न अफ़्रीका डेवलपमेंट कम्युनिटी (एसएडीसी/SADC), क्षेत्रीय एकीकरण के मामले में वे बहुत प्रभावी संगठन रहे हैं। सुरक्षा और राजनीतिक मोर्चे पर, ईसीओडब्ल्यूएएस (ECOWAS) क्षेत्र में कई समस्याओं को हल करने में सक्षम रहा है। अतीत में इसने लाइबेरिया और सिएरा लियोन में गृह युद्धों को समाप्त करने में मदद की और देशों के बीच उपयोगी आर्थिक संबंध स्थापित कराए। माली, नाइज़र और बुर्किना फासो के मामले में इसने सैन्य तख्तापलट के लिए उनकी सदस्यता निलंबित कर दी।
यहाँ तक कि एयू (AU) में भी उन्हें अपनी गतिविधियों से निलंबित कर दिया, जैसा कि उन्होंने तख्तापलट का नेतृत्व करने के लिए गैबॉन, गिनी और सूडान के मामले में किया था।

अब जबकि इनमें से तीन देशों ने ईसीओडब्ल्यूएएस (ECOWAS) से बाहर आने की घोषणा कर दी है; उनके लिए इसका क्या अर्थ है? तीनों देशों द्वारा समूह से बाहर आने का निर्णय स्पष्ट रूप से ईसीओडब्ल्यूएएस (ECOWAS) द्वारा उन पर लगाए गए प्रतिबंधों के कारण उपजी हताशा से प्रेरित है, इन प्रतिबंधों के कारण उनका व्यापार रोक दिया गया, संपत्तियों को जब्त कर लिया गया और बाहर की दुनिया से उनका संपर्क समाप्त कर दिया गया था। इन देशों को लगता है कि ईसीओडब्ल्यूएएस (ECOWAS) उनकी समस्या को सुनना नहीं चाहते थे। इससे यह भी पता चलता है कि तीनों देश ब्लॉक से स्वतंत्र होने के लिए ईसीओडब्ल्यूएएस (ECOWAS) में प्राप्त किसी भी विशेषाधिकार को खोने को तैयार हैं। तो सवाल यह है कि फिर वे क्या खो देंगे? पहला, वे ईसीओडब्ल्यूएएस (ECOWAS) की पासपोर्ट व्यवस्था की पहुँच खो देंगे, जो ब्लॉक के देशों में वीज़ा- मुक्त यात्रा और मुफ्त आवाजाही की गारंटी है। क्या सच में ऐसा होने वाला है?

दूसरा, ये देश चारों तरफ से ज़मीन से घिरे देश हैं, जिसका अर्थ है और भी अधिक अलग- थलग पड़ जाना। क्या इन देशों के पास ईसीओडब्ल्यूएएस (ECOWAS) का कोई विकल्प है, कोई क्षेत्रीय समूह जिसका वे हिस्सा बन सकते हैं? बेशक, उन्होंने एक गठबंधन बनाया है, जिसे सहेल डिफेंस पैक्ट कहा जाता है। लेकिन यह सैन्य हस्तक्षेप से खुद को बचाने के लिए है। और हम जानते हैं कि यह अभी भी एक बहुत ही नाजुक समूह है। ईसीओडब्ल्यूएएस (ECOWAS) 15 देशों का समूह है।

यदि उनके समूह से बाहर होने के फैसले को स्वीकार कर लिया जाता है, तो इससे उनके व्यापार और सेवाओं का प्रवाह बाधित होगा। इसके घरेलू प्रभाव होंगे और इन देशों का अपने पड़ोसी देशों के साथ संबंध भी प्रभावित होगा।

उदाहरण के लिए, नाइज़ीरिया के उत्तर- पश्चिम और कुछ उत्तर- पूर्वी देशों के लोगों के नाइज़र के लोगों के साथ सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक संबंध हैं और नाइज़र नाइजीरिया के सड़क, रेल, रसद और सुरक्षा कार्यक्रमों का एक प्रमुख लाभार्थी रहा है। नाइज़र पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा क्योंकि वह बिजली और व्यापार के लिए नाइजीरिया पर निर्भर है। माली विशेष रूप से ईसीओडब्ल्यूएएस (ECOWAS) से आयात पर निर्भर है, जो 2022 में माली के व्यापारिक आयात का 34.9% था। क्या इससे ये तीन देश उत्तरी अफ़्रीकी देशों लीबिया, अल्ज़ीरिया और मोरक्को के साथ गहरे संबंध बनाने पर ध्यान केंद्रित करेंगे? क्या वे आतंकवाद से लड़ने में सहयोग करेंगे?

हम देख रहे हैं कि सीमावर्ती देश नाइजीरिया, जो वर्तमान में ईसीओडब्ल्यूएएस (ECOWAS) का अध्यक्ष है, में एक आंतरिक बहस चल रही है, जिसमें कुछ नेता कह रहे हैं कि सैन्य हस्तक्षेप का समर्थन करने के लिए उनके देश की प्रारंभिक स्थिति वास्तव में सही कदम नहीं है और वह है उन्हें अपना रुख नरम करना चाहिए। नाइज़ीरिया के पूर्व उपराष्ट्रपति अतीकू अबुबकर ने ईसीओडब्ल्यूएएस (ECOWAS) के वर्तमान अध्यक्ष राष्ट्रपति बोला टीनुबू को एयू (AU) के साथ कूटनीति तैनात करने और स्थिति को बचाने की सलाह दी। उन्होंने सुझाव दिया कि जनता के खिलाफ प्रतिबंध कभी काम नहीं आए और वे केवल क्रूर हैं। नाइज़ीरिया में सिविल सोसाइटी समूहों के एक गठबंधन ने नाइज़र, माली और बुर्किना फासो के अधिकारियों से अपना निर्णय रद्द करने का आग्रह किया है।

ईसीओडब्ल्यूएएस (ECOWAS) ने जो प्रतिबंध व्यवस्था लागू की है, उसके संबंध में सवाल यह है कि वास्तव में इससे किसे लाभ होने वाला है? क्या इससे ईसीओडब्ल्यूएएस (ECOWAS) को कोई लाभ होने वाला है? ईसीओडब्ल्यूएएस (ECOWAS) ने जो किया है वह यह है कि उन्होंने व्यापार को प्रतिबंधित कर दिया है; उन्होंने अपनी सरकारी संपत्तियों को जब्त कर लिया है। परिणामस्वरूप, अब ये देश नहीं खरीद पा रहे खाना; लोग बैंकों से पैसे भी नहीं निकाल पा रहे हैं। इसलिए, अंततः, लोग ही प्रभावित हो रहे हैं। खाद्य आयात बिल इतना बढ़ गया है और मुद्रास्फीति बढ़ गई है। यह लोगों पर प्रतिबंधों का का एक प्रमुख प्रभाव रहा है।

इसलिए, सवाल यह है कि क्या स्थिति से निपटने के लिए प्रतिबंध लगाने का ईसीओडब्ल्यूएएस (ECOWAS) दृष्टिकोण सही है? क्या यह वास्तव में शासन या लोगों को निशाना बना रहा है? यह एक ऐसा मुद्दा है जिससे ईसीओडब्ल्यूएएस (ECOWAS) को निपटना होगा। बेशक, ईसीओडब्ल्यूएएस (ECOWAS) ने अब अपना रुख नरम कर लिया है और वह अब इन देशों को बातचीत और सुलह के लिए आने को कह रहा है। अतीत में हमने सदस्य देश के समूह छोड़ने और वापस शामिल होने के ऐसा ही उदाहरण देखे हैं। जैसे, मॉरीतानिया ने दिसंबर 1999 में एक साल का नोटिस देने के बाद दिसंबर 2000 में ईसीओडब्ल्यूएएस (ECOWAS) छोड़ने का फैसला किया। हालाँकि दो दशक बाद, दिसंबर 2019 में, मॉरीतानिया ईसीओडब्ल्यूएएस (ECOWAS) के साथ एक साझेदारी समझौते (व्यापार और प्रवासन को कवर) पर हस्ताक्षर करने के लिए वापस आया। हम देखेंगे कि इस मुद्दे से कैसे निपट जाता है।

अब दूसरे प्रश्न पर आते हैं कि क्षेत्रीय एकीकरण प्रक्रिया के लिए इसका क्या अर्थ है? क्षेत्रीय एकीकरण के मामले में ईसीओडब्ल्यूएएस (ECOWAS) काफी लंबा सफ़र तय कर चुका है। अफ़्रीका के भीतर फिर से एक बहस चल रही है। इसका क्या अर्थ है? क्या इसका अर्थ है महाद्वीप में एकीकरण की प्रक्रिया के लिए एक बाधा मात्र है? या इसका अर्थ यह है कि यह एकीकरण प्रक्रिया बेपटरी होने वाली है? हम देखेंगे कि स्थिति किस प्रकार हमारे सामने आती है। किसी ने इसे अफ़्रीका ब्रेक्ज़िट का नाम दिया है। यह आसान नहीं है क्योंकि यदि आप ईसीओडब्ल्यूएएस (ECOWAS) क्षेत्र को देखें, तो आपको बाकी देशों में माली, नाइज़र और बुर्किना फासो के नागरिक रहते हुए मिलेंगे। इन तीन देशों के नागरिक ईसीओडब्ल्यूएएस (ECOWAS) के मुख्यालय में भी काम कर रहे हैं। पूरे क्षेत्र में मौसमी प्रवासन होता है और ये सभी चीजें हैं जिन्हें आप उस क्षेत्र में रातोंरात पूर्ववत नहीं कर सकते हैं जो पहले से ही इतना एकीकृत है। आप जानते हैं कि इसमें घोषणाओं से कहीं अधिक समय लगता है। ईसीओडब्ल्यूएएस (ECOWAS) को इस बात पर विचार करने की आवश्यकता है कि वह इस मुद्दे को कैसे हल करेगा। समुदाय के सदस्य के रूप में तीन देशों के महत्व को रेखांकित करते हुए, ईसीओडब्ल्यूएएस (ECOWAS) ने कहा है कि समूह वर्तमान राजनीतिक समस्या का बातचीत के जरिए समाधान खोजने को प्रतिबद्ध है।

तो हम देखते हैं कि कैसे ईसीओडब्ल्यूएएस (ECOWAS) ने अपना रुख नरम कर लिया है।

अब इस क्षेत्र में हुई दूसरी घटना पर बात करते हैं, जो साहेल में पश्चिमी सैनिकों की वापसी के बारे में है। हमने देखा कि कैसे फ्रांस और पश्चिमी ताकतों को इन तीन देशों ने अपना इलाका छोड़ने को कहा और उन्होंने अपने सैनिकों को वापस बुला लिया। फ्रांस समर्थित जी5 सहेल गठबंधन, क्षेत्रीय आतंकवाद विरोधी बल जिसकी स्थापना 2017 में हुई थी, उसमें मॉरीतानिया, चाड, बुर्किना फासो, माली और नाइज़र शामिल थे, जिसे दिसंबर 2023 में भंग कर दिया गया था। सबसे पहले माली ने मई 2022 में संगठन छोड़ा था, उसके बाद दो अन्य सदस्य देशों- बुर्किना फासो और नाइज़र ने संगठन को अलविदा कह दिया। तो सवाल यह है कि फ्रांस के लिए इसका क्या अर्थ है और इसका क्षेत्र पर क्या प्रभाव पड़ेगा?

ऐतिहासिक, रणनीतिक और सांस्कृतिक रूप से फ्रांस पश्चिम अफ़्रीका की भू-राजनीति का सबसे महत्वपूर्ण खिलाड़ी रहा है। क्षेत्रीय भू- राजनीति में सभी बदलाव फ्रांसीसी कार्यों या क्षेत्र के विकास पर प्रतिक्रियाओं से संबंधित हैं। फ्रांस पश्चिम अफ़्रीका की अग्रणी औपनिवेशिक शक्ति था और उपनिवेशवाद से मुक्ति के बाद भी इस क्षेत्र में उसकी नव-उपनिवेशवादी उपस्थिति बहुत अधिक थी। हालाँकि, पिछले कुछ वर्षों में, पश्चिम अफ़्रीका में फ्रांस की व्यापक उपस्थिति के खिलाफ विरोध बढ़ रहा है और पेरिस इस क्षेत्र में उपस्थिति की शर्तों को नया आकार देने की कोशिश में लगा है। फ्रांस का निष्कासन उस खुले तौर पर शत्रुतापूर्ण रवैये का प्रतीक है जिसका वह इस क्षेत्र में सामना कर रहा है।

इस वापसी ने साहेल में आतंकवाद विरोधी अभियानों के 'यूरोपीयकरण' करने के फ्रांसीसी प्रयासों को एक बड़ा झटका दिया है। यूरोपीय देशों ने माली में यूरोपीय प्रशिक्षण मिशन (ईयूटीएम) के हिस्से के रूप में 1,100 सैनिकों की तैनाती की थी।

इसके अलावा, संयुक्त राष्ट्र शांति अभियान एमआईएनयूएसएमए (MINUSMA) के तहत, यूरोपीय संघ के 23 देशों ने 1600 सैनिकों को तैनात किया था। इसलिए, 'ऑपरेशन ताकुबा' 'यूरोपीय विशिष्ट बलों का एक अभूतपूर्व गठबंधन जिसका मिशन आतंकवाद विरोधी

अभियानों में माली के सशस्त्र बलों को सलाह देना, उनकी मदद करना और साथ देना था', के रूप में जाना जाने लगा।

दूसरी ओर, बुर्किना फासो और नाइज़र ने यह दावा करते हुए गठबंधन से अपनी वापसी को उचित ठहराया कि यह अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में विफल रहा और संस्थागत बाधाओं से बाधित हुआ क्योंकि हिंसा लगातार होती रही और उसमें हज़ारों नागरिकों एवं लड़ाकों की मौत हो गई। साथ- ही- साथ लाखों लोगों को विस्थापित भी होना पड़ा। ऐसा महसूस किया गया कि चूँकि आतंकवाद विरोधी टास्क फोर्स ने पूरी तरह से सैन्यीकृत रवैया अपनाया, इसी वज़ह से मन के मुताबिक नतीजे नहीं मिले; आर्थिक और विकास के पहलू पर कोई विचार नहीं किया गया। इसके अलावा, इस सवाल पर कि फ्रांस के खिलाफ विरोध क्यों हुआ और लोगों की ओर से रूसियों को समर्थन क्यों मिला? उत्तर मिला- आतंकवाद पर अंकुश लगने के बजाय सैन्य अभियानों के कारण हताहतों की संख्या में वृद्धि के कारण फ्रांस विरोधी भावना गहरी होती चली गई। बल्कि आतंकवाद बढ़ा ही। इसने वास्तव में सरकार के खिलाफ जनता में असंतोष को बढ़ावा दिया है और सैन्य अधिग्रहण को वैध बना दिया है।

सुरक्षा के मोर्चे पर स्थिति क्या है? निश्चित रूप से, अब एक सूरक्षा शून्य सा बन गया है। इसलिए, सितंबर से लेकर अब तक यदि आप केवल आंकड़ों पर विचार करें तो ऐसी रिपोर्टें हैं जो बताती हैं कि इस क्षेत्र में जेएनआईएम (JNIM) और इस्लामिक स्टेट जैसे जिहादी समूहों से जुड़ी हिंसा में 70% की वृद्धि देखी गई है। जैसा कि मैंने बताया, ऐसे कई आतंकी संगठन हैं जो इस क्षेत्र में फैले हुए हैं। जमात नुसरत अल- इस्लाम मुस्लिमीन (जेएनआईएम/ JNIM), इस्लामिक स्टेटे इन द ग्रेटर सहारा (आईएसजीएस/ ISGS) और इस्लामिक स्टेट इन द वेस्ट अफ़्रीकन प्रोविंस (आईएसडब्ल्यूएपी/ ISWAP) समेत अन्य संगठनों ने, सरकारी बलों और नागरिकों पर समान रूप से अंधाधुंध हमले करने के लिए इस क्षेत्र में आने वाले देशों को मंच के रूप में इस्तेमाल करके उस शून्य का लाभ उठा चुके हैं। क्या इन देशों के पास ऐसे आतंकवादी हमलों से निपटने की क्षमता और आधारभूत सुविधाएँ हैं? निश्चित रूप से, इन तीनों ही देशों के पास सहेल क्षेत्र में सुरक्षा स्थिति से निपटने के लिए आवश्यक क्षमता और आधारभूत सुविधाओं की कमी है। नया गठबंधन - सहेल देशों का गठबंधन- बनाया गया है, वह, तख्तापलट के नेताओं की सुरक्षा करने और क्षेत्रीय ब्लॉक ईसीओडब्ल्यूएएस (ECOWAS) से खतरों के बीच अपनी स्थिति को मजबूत करने की कोशिश में लगा है।

इस स्थिति को देखते हुए उनकी भविष्य की सुरक्षा रणनीति के लिए इसका क्या अर्थ है? सुरक्षा स्थिति से वे किस प्रकार निपटेंगे? नए साझीदार कौन होंगे? बेशक, ईसीओडब्ल्यूएएस (ECOWAS) ने सुरक्षा स्थिति से निपटने पर प्रतिवचन दिया है। ईसीओडब्ल्यूएएस (ECOWAS) लगातार सुशान, संस्थानों को मजबूत बनाने पर ज़ोर दे रहा है और हाल ही में फरवरी 2024 में हुए एक बैठक में लिए गए निर्णयों में से एक निर्णय था- आतंकवाद से निपटने के लिए ईसीओडब्ल्यूएएस (ECOWAS) की स्टैंडबाय फोर्स का मुद्दा, जिसमें इसे जल्द- से- जल्द सक्रिए करने की आवश्यकता पर ज़ोर दिया गया था लेकिन, ये कब तक होगा, हम नहीं जानते। क्योंकि क्षेत्रीय समूहों का, अफ़्रीका का क्षेत्रीय स्टैंडबाय फोर्स, एक दीर्घकालिक परियोजना रही है। और यह अब तक सफल नहीं हुआ है क्योंकि वित्त, कमांड और नियंत्रण से संबंधित मुद्दों पर अलग- अलग देशों के बीच सहमति नहीं बन सकी है। मुख्य चुनौती यह बनी हुई बै कि वे इस क्षेत्रीय लड़ाकू बल के लिए धन कहाँ से लाएंगे और इसकी कमान कौन संभालेगा? वे इस बात पर ज़ोर दे रहे हैं कि वे आतंकवाद से निपटने के लिए एक बल का गठन करेंगें लेकिन इसमें समय लगेगा। ईसीओडब्ल्यूएएस (ECOWAS) ने प्रतिबंधों के बावजूद इस अवधि के दौरान आतंकवाद से लड़ने के मुद्दे पर इन देशों को अलग- अलग रूपों में समर्थन प्रदान करना जारी रखा है। तीनों देश द्विपक्षीय समर्थन की संभवना तलाश सकते हैं। हमने देखा है कि फ्रांस सेना की बढ़ती उपस्थिति के प्रति जनता की नाराज़गी नाइजीरियाई सेना द्वारा निर्वाचित राष्ट्रपति मोहम्मद बज़ौम की बजाए जनरल अब्दुर्रहमान त्वियानी के नेतृत्व में तख्तापलट का समर्थन करने का एक प्रमुख कारण था। इस बीच, निश्चित रूप से इस स्थिति ने वास्तव में रूस के लिए अपनी उपस्थिति बढ़ाने और इस क्षेत्र में अपनी उपस्थिति को वैध बनाने के अवसर का विस्तार किया है। और हमने देखा है कि ऐसा हुआ है।

रूसी वैगनेर भाड़े का समूह पहले से ही इस क्षेत्र में काम कर रहा है, जो सुरक्षा सहायता प्रदान करने में मदद कर रहा है। माली के सैन्य शासन द्वारा रूस को इस्लामी विद्रोहियों के खिलाफ लड़ाई का समर्थन करने के लिए वैगनेर समूह के निजी सैन्य ठेकेदारों (पीएमसी/ PMC) को भेजने के लिए आमंत्रित किया गया था। लेकिन हम यह भी जानते हैं कि रूस का हित सिर्फ सुरक्षा तक ही सीमित नहीं है। इसकी उपस्थिति सुरक्षा के साथ- साथ संसाधन निष्कर्षण के क्षेत्र में भी है। हम जानते हैं कि वैगनेर समूह खनिज संसाधन निष्कर्षण से संबंधित अपने आर्थिक हितों को कैसे पूरा करता रहा है। अनुमान के अनुसार माली में 1,000 रूसी सैनिक हैं- पूर्व में वैगनेर, अब यह राष्ट्र द्वारा संचालित और अफ़्रीका कॉर्स के रूप में पुनः ब्रांड किया गया है- और पहले 100 बुर्किना फासो पहुँच चुके हैं।

सवाल यह है कि फ्रांस की तुलना में रूस को अधिक स्वीकार क्यों किया जा रहा है? रूस किसी भी उपनिवेश विरोधी और शोषण विरोधी खेमा से नहीं जुड़ा इसलिए भागीदार के रूप में अधिक स्वीकार्य है। पश्चिम अफ़्रीका में रूस की भागीदारी भी शासन- तटस्थ है। इसे सैन्य सरकार या निरंकुश शासनों से जुड़ने में कोई समस्या नहीं है। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में रूस की स्थायी सदस्यता इन देशों के लिए उपयुक्त है; और इसकी तकनीकी एवं सैन्य क्षमताएं भी मॉस्को को अफ़्रीका में अधिक स्वीकार्य बनाती हैं।

स्पष्ट रूप से अब प्रवृत्ति यह है कि गैर- पश्चिमी शक्तियों के लिए उस क्षेत्र में प्रवेश करना आसान हो गया है जिस पर अब तक पूरी तरह से फ्रांस का नियंत्रण था। यहां तक कि भारत के लिए, यदि आप अफ़्रीका के साथ हमारे संपूर्ण संबंधों को देखें, तो, एंग्लोफोन अफ़्रीका के साथ, हम उस तरह से आगे नहीं बढ़े हैं जैसा हमें होना चाहिए था, न केवल भाषा की समस्या के कारण, बल्कि फ्रांसीसी नियंत्रण के कारण भी। कहा जाता था कि अगर आपको इन देशों से जुड़ना है तो फ्रांस के जरिए जुड़ना होगा। आज तक, भले ही हमने कई पहल की हैं, उदाहरण के लिए टीम-9 पहल, लेकिन हमारी उपस्थिति अभी भी वैसी नहीं है जैसी होनी चाहिए थी।

इस तथ्य को देखते हुए कि फ्रांस अब बाहर कर दिया गया है, गैर- पश्चिमी देशों के लिए इस क्षेत्र तक पहुँच आसान हो जाएगी, चाहे वह रूस हो, चीन या कोई अन्य देश हो।

स्पष्ट भू-राजनीतिक परिवर्तन ने पश्चिम अफ़्रीकी देशों को सौदेबाज़ी की अधिक शक्ति प्रदान की है। फ्रांस से उपनिवेश खत्म होने के बाद भी दशकों तक जो स्थिरता रही थी, उसने अनिश्चित और अस्थिर भविष्य का मार्ग प्रशस्त कर दिया है। क्या इसका अर्थ यह है कि उनके पास बड़ी एजेंसी है या वे अधिक आत्मनिर्भर हो गए हैं? जैसा कि हम देख पा रहे हैं, वे एक देश से मुक्त हो कर दूसरे देश पर निर्भर हो गए हैं।

मैं संक्षेप में आर्थिक पहलू पर बात करूँगी। जैसा कि आप सभी जानते हैं कि आर्थिक रूप से ये तीनों देश सीएफए फ्रैंक का हिस्सा हैं। इन देशों को 1960 और 70 के दशक में आज़ादी मिली थी लेकिन वे मुद्रा से जुड़े रहे, जिसे अब "कम्युन्यूट फाइनैन्सिअर अफ़्रीकीन" (अफ़्रीकी वितीय समुदाय) नाम दिया गया है। सीएफए, जिसे विशेष रूप से 1945 में अफ़्रीका के फ्रांसीसी उपनिवेशों के लिए बनाया गया था, यूरो से जुड़ा है और इसकी परिवर्तनीयता की गारंटी फ्रांस देता है। वर्षों से, सरकारी अधिकारियों द्वारा सीएफए को मौद्रिक स्थिरता को बढ़ावा देने, आर्थिक एकीकरण को सुविधाजनक बनाने और समग्र आर्थिक प्रदर्शन को बढ़ाने के लिए एक तंत्र के रूप में प्रचारित किया गया था। इस प्रणाली ने फ्रांस को अपने अफ़्रीकी क्षेत्रों पर महत्वपूर्ण आर्थिक और राजनीतिक प्रभाव प्रदान किया क्योंकि इसने मुद्रा की परिवर्तनीयता और मौद्रिक नीति पर नियंत्रण बनाए रखा। लेकिन अब विवाद का विषय बदल गया है, विवाद मुद्रा की संप्रभुता को लेकर भी है।

ये देखते हुए कि ये तीनों देश ईसीओडब्ल्यूएएस (ECOWAS) से बाहर निकल गए हैं, क्या इससे ये देश ईसीओडब्ल्यूएएस (ECOWAS) के उप- संगठन वेस्ट अफ़्रीकन इकॉनोमिक एंड मोनेटरी यूनियन (UEMOA या WAEMU), जो सीएफए मुद्रा का प्रयोग करता है, से भी बाहर हो जाएंगे। इस मौद्रिक संघ में 8 देश हैं और वर्तमान स्थिति ने उनके इस संघ के भविष्य को भी अनिश्चित बना दिया है। अब सीएफए फ्रैंक- यूरो से जुड़ी मुद्रा जो 8 पश्चिमी और मध्य अफ़्रीकी देशों में प्रयोग की जाती है- को नई आम पश्चिमी अफ़्रीकी मुद्रा, जिसे 'इको' नाम दिया गया है, से बदलने के लिए कदम उठाए जा रहे हैं।

भले ही इन इन आठ पश्चिमी अफ़्रीकी देशों जिनमें बेनिन, टोगो, बुर्किना फासो, माली, सेनेगल, आइवरी कोस्ट, नाइज़र और गिनी बिसाऊ शामिल हैं, ने, वर्षों पहले स्वतंत्रता प्राप्त कर ली थी, फिर भी उन्होंने अपने विदेशी मुद्रा भंडार को फ्रेंच सेंट्रल बैंक में रखना जारी रखा है। उन्होंने अब अपने मुद्रा भंडार को सेनेगल में स्थानांतरित करने का निर्णय लिया है। विश्लेषकों द्वारा औपनिवेशिक अवशेष के रूप में वर्णित व्यवस्था के अनुसार, इन अफ़्रीकी देशों को अपने विदेशी मुद्रा भंडार का आधा हिस्सा फ्रेंच सेंट्रल बैंक में जमा करना था।

बेनिन के राष्ट्रपति ने दावा किया है कि पेरिस भी उनके मुद्रा भंडार को जारी करने पर सहमत हो गया है, जो अब सेनेगल स्थित सेंट्रल बैंक ऑफ वेस्ट अफ़्रीकन स्टेट्स के पास रहेगा। इसलिए, ये सारी चर्चा जिसे हमने विभिन्न आयामों में देखा- सुरक्षा, भू-राजनीति और आर्थिक- यह देखना बाकी है कि क्या इससे स्थिरता आएगी या अधिक अस्थिरता पैदा होगी? लेकिन निश्चित रूप से, ये देश अधिक मुखर हो रहे हैं और उनकी सौदेबाजी की शक्ति बढ़ गई है। क्या इससे वे आत्मनिर्भर बनेंगे या उनकी निर्भरता बनी रहेगी, यह आने वाला समय बताएगा।

राजदूत विजय ठाकुर सिंह

डॉ. निवेदिता रे, आपका बहुत- बहुत धन्यवाद। आपने तीन देशों के ईसीओडब्ल्यूएएस (ECOWAS) से बाहर निकलने के निहितार्थों और उनके एवं ईसीओडब्ल्यूएएस (ECOWAS) के लिए इसका क्या अर्थ है, इस पर अपने विचार रखे। आपने हाल के घटनाक्रमों के नव-उपनिवेशवाद के खिलाफ लड़ाई का एक चरण होने की संभावना के बारे में भी बात की है। इसने उन दूसरे देशों के लिए भी जगह बनाई है जो औपनिवेशक खेमा के बिना आए हैं। आपने मुद्रा संप्रभुता समेत संप्रभुता की संपूर्ण इच्छा के बारे में भी बात की। ईसीओडब्ल्यूएएस (ECOWAS) से स्वतंत्र रूप से कार्य करने की तीन देशों की क्षमताओं और क्षमताओं पर अभी भी प्रश्नचिन्ह लगा हुआ है। ये तीनों देश कैसे आगे बढ़ेंगे और ये नया विचार किस प्रकार काम करेगा?

मुझे लगता है कि हमें बेहद आकर्षक प्रस्तुतियां देखने को मिली हैं। अब मैं आप सब से अपने विचारों को साझा करने और सवाल पूछने का अग्रह करती हूँ।

डॉ. अर्नब चक्रबर्ती

महोदया, धन्यवाद। मैं अर्नब, आईसीडब्ल्यूए में शोध अध्येता हूँ। फ्रांस के खिलाफ लोगों के असंतोष को देखते हुए, फ्रांस से साहेल क्षेत्र के लिए अपनी रणनीति पर पुनर्विचार करने की मांग बढ़ रही है। ऐसे में साहेल क्षेत्र को देखते हुए फ्रांस की रणनीति क्या होनी चाहिए?

साहेल में जटिल स्थिति को देखते हुए, असुरक्षा, गरीबी और कुशासन का मिश्रण है। तत्काल प्रभाव इस क्षेत्र में यूरोप की ओर स्वैच्छिक एवं विवश प्रवासन दोनों पर हैं। यूरोप इस क्षेत्र से हो रहे पलायन को लेकर बहुत चिंतित है। मेरा प्रश्न यह है कि इस प्रवासन के प्रति यूरोप की क्या प्रतिक्रिया रही है और इस मुद्दे पर आपका क्या कहना है?

सुश्री एम्बी

धन्यवाद

धन्यवाद। मैं श्रीपति, परिषद में शोध अध्येता हूँ। मेरा सवाल यह है कि इस तथ्य को देखते हुए कि नाइज़र, माली और बुर्किना फासो ईसीओडब्ल्यूएएस (ECOWAS) से बाहर निकलने जा रहे हैं, इसका क्षेत्र की स्थिरता किस प्रकार प्रभावित होगी? मेरा आपसे दूसरा सवाल है, इन देशों को जोड़े रखने के लिए ईसीओडब्ल्यूएएस (ECOWAS) की कार्य योजना क्या है?

डॉ. श्रीपति नारायण

राजदूत विजय ठाकुर सिंह

मैं कुछ और प्रश्न लेना चाहूँगी और फिर मैं पैनल के हर एक सदस्य को सामूहिक रूप से उत्तर देने के लिए कहूँगी।

डॉ. अतहर ज़फर

धन्यवाद महोदया। मेरा सवाल पैनल के हर एक सदस्य के लिए है। मेरा पहला सवाल प्रोफेसर शाजी से है, चूँकि उन्होंने अफ़्रीकन यूनियन और उसकी विफलता का उल्लेख किया था। तो, क्षेत्र में तख्तापलट और नागरिक सरकारों को उखाड़ फेंकने के संबंध में, विशेष रूप से साहेल क्षेत्र में, अफ़्रीकन यूनियन की संभावित प्रतिक्रिया क्या होगी?

मेरा अगला सवाल प्रोफेसर बासु से है। महोदया, आपने उपनिवेशवाद और नव-उपनिवेशवाद का जिक्र किया। ऐसा लगता है कि, अफ़्रीका में यूरोप का प्रभाव कम होता जाएगा। हालाँकि, विचारों का उपनिवेशीकरण जारी रहेगा। इसलिए अफ़्रीका के लिए चुनौतियां अधिक हैं। इसके बारे में आपका क्या कहना है?

डॉ. रे से मेरा सवाल यह है कि आपने साहेल क्षेत्र में सुरक्षा का उल्लेख किया है और फ्रांस इससे कैसे निपटने का प्रयास कर रहा है?
यह देखते हुए कि फ्रांस ने अल्ज़ीरिया पर कब्ज़ा करने की कोशिश की और आख़िरकार उसे आज़ाद करना ही पड़ा। क्या अल्ज़ीरिया और साहेल क्षेत्र से निपटने की फ्रांस की नीति प्रतिक्रिया

में कोई समानता है?

सुश्री अवनी सबलोक

धन्यवाद महोदया। मेरा सवाल यह है कि विश्व बैंक के अनुमानों के अनुसार, साहेल क्षेत्र के पांच देशों (बुर्किना फासो, चाड, माली, मॉरितानिया और नाइज़र) में जुलाई, अगस्त 2023 से लगभग 1 करोड़ 20 लाख (10.2 मिलियन) लोगों को खाद्य असुरक्षा का सामना करना पड़ा है। इस संदर्भ में, इन देशों में खाद्य सुरक्षा संकट को कम करने के लिए सैन्य सरकारों द्वारा क्या नीतियां अपनाई गईं हैं और उन्हें अब तक क्या सफलता मिली है? इस संबंध में संयुक्त राष्ट्र की क्या प्रतिक्रिया है?

श्री शाकिब

धन्यवाद महोदया। मेरा सवाल यह है कि माली में संयुक्त राष्ट्र के बहुआयामी एकीकृत स्थिरीकरण मिशन को समाप्त कर दिया गया है और इससे क्षेत्र में सुरक्षा शून्य पैदा हो गया है। साहेल क्षेत्र में संकट से निपटने के लिए संयुक्त राष्ट्र क्या रणनीति अपनाता है?

राजदूत विजय ठाकुर सिंह

धन्यवाद। अब मैं वर्चुअल पार्टीसिपेंट्स से अपने सवाल पूछने का अग्रह करती हूँ।

सुश्री अनु मारिया जोसेफ

धन्यवाद महोदया। मैं, अनु मारिया जोसेफ। मैं नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज़, बैंगलुरु में रिसर्च एसोसिएट हूँ। मेरे पास पैनल के हर एक सदस्य के लिए एक सवाल है।

मेरा पहला सवाल शाजी सर के लिए है? महोदय, आपने विद्रोही समूहों के ढीले- ढ़ाले गठबंधन के बारे में बात की। तो, मेरा सवाल यह है कि ये समूह कितने परिष्कृत हैं? क्या इन समूहों का अनिश्चित चरित्र उन कारणों में से एक है जिसके कारण इस क्षेत्र में उग्रवाद के खिलाफ लड़ाई विफल रही? यदि आप उत्तरी माली या पड़ोसी देशों, नाइज़र या बुर्किना फासो को देखें, तो पूरा क्षेत्र शासन से अलग- थलग है और ये विद्रोही समूह एक छद्म देश प्रकार की संरचना के रूप में काम करते हैं जहां वे सभी प्रकार की सेवाएं भी प्रदान करते हैं। इस क्षेत्र के जातीय समुदाय देश संरचना प्रदाता के रूप में इन विद्रोही समूहों पर विश्वास करते हैं। क्या हम इन विद्रोही समूहों के चरित्र को समझने में विफल रहे और क्या यही कारण है कि हम इन विद्रोही समूहों से लड़ने में भी असफल रहे?

मेरा दूसरा सवाल बासु मैडम से है। महोदया, उपनिवेशवाद के प्रभाव के बारे में आपने बात की और बताया कि बीते 30 से 40 सालों में इसने किस प्रकार इस क्षेत्र को प्रभावित किया है। मेरा सवाल है कि हम कब तक उपनिवेशवाद को कोसते रहेंगे। चूँकि एक तरफ, अफ़्रीका अफ़्रीकी समस्याओं के लिए अफ़्रीकी समाधानों की बात कर रहा है तो दूसरी तरफ, वो पश्चिम के देशों से सभी समस्याओं के लिए मुआवज़ा, सहायता, प्रतिवचन मांग रहा है।

मेरा तीसरा प्रश्न निवेदिता मैम से है। महोदया, हम नाइज़र, बुर्किना फासो और माली द्वारा बनाए गए साहेल गठबंधन पर चर्चा कर रहे हैं। तो, मेरा सवाल है, क्या इससे इस क्षेत्र के अन्य सैन्य शासन मजबूत होंगे? धन्यवाद।

राजदूत विजय ठाकुर सिंह

मैं दो और प्रश्न लेना चाहूँगी और फिर पैनल के सदस्यों को उत्तर देने को आमंत्रित करूँगी।

डॉ. अर्शद

धन्यवाद महोदया। पश्चिम अफ़्रीका के टोगो, बेनिन, घाना और कोटे डी आइवर जैसे तटीय देश आतंकवाद के नए मामलों का समाना कर रहे हैं। तो, पैनल के सदस्यों से मेरा सवाल यह है कि, तटीय देशों में आतंकवाद फैलने का कारण क्या है और ये तटीय देश आतंकवाद के प्रसार के बारे में क्या कर रहे हैं?

डॉ. फज़्ज़ुर रहमान सिद्दीकी

धन्यवाद। साहेल क्षेत्र गरीबी, मरुस्थलीकरण, मादक पदार्थों की तस्करी जैसी विभिन्न प्रकार की चुनौतियों से भरा हुआ है और इन समस्याओं को हल करने के लिए, भूमि की उत्पादकता को बढ़ाने हेतु, अफ़्रीकन यूनियन ने ग्रेट ग्रीन वॉल नाम का एक कार्यक्रम आरंभ किया है। उस संबंध में, उन्होंने अंतरराष्ट्रीय दानदाताओं के साथ मिल कर काम किया है। हालाँकि, सुरक्षा की जटिल स्थिति को देखते हुए, इस कार्यक्रम की भविष्य की संभावनाएं क्या हैं? धन्यवाद।

राजदूत विजय ठाकुर सिंह

धन्यवाद। मैं डॉ. निवेदिता से शुरू करूँगी, फिर डॉ. मौशुमि, और आखिर में डॉ. शाजी उत्तर देंगे। मैं, उत्तर देने के लिए पैनल के प्रत्येक सदस्य को पांच से सात मिनटों का समय दूँगी।

डॉ. निवेदिता रे

इस सवाल पर कि गठबंधन कैसा होगा, क्या यह अन्य सैन्य शासनों को मजबूत करने वाला है? यह सब परिस्थितियों पर निर्भर करता है क्योंकि आपको यह देखना होगा कि एक क्षेत्रीय समूह के रूप में अन्य देश ईसीओडब्ल्यूएएस (ECOWAS) पर कैसे निर्भर हैं। क्योंकि अफ़्रीका, जिस महाद्वीप में सैन्य तख्तापलट का इतिहास रहा है,

कभी- कभी लोकतांत्रिक प्रक्रिया के माध्यम से सत्ता में आए हैं या संवैधानिक व्यवस्था बहाल हेने के साथ नागरिक सरकारों को सत्ता हस्तांतरित की है। ऐसे में इन तीन देशों के गठबंधन बनाने से यह देखना बाकी है कि क्या यह गठबंधन सुरक्षा स्थिति से निपटने के मामले में प्रभावी होगा या नहीं। जैसा कि मैंने पहले ही बताया था, अगर ये तीन देश ईसीओडब्ल्यूएएस (ECOWAS) से बाहर आते हैं तो उन्हें कई आर्थिक चुनौतियों का भी सामना करना पड़ेगा और साथ ही सुरक्षा संबंधी अनेक चुनौतियों का भी सामना करना पड़ेगा।
इसलिए, कोई भी अन्य देश अपने हितों को देख कर ही गठबंधन में शामिल होने का निर्णय करेगा। क्षेत्रीय स्तर पर मुझे नहीं लगता कि ऐसा कुछ निकट भविष्य में होने वाला है।

दूसरे सवाल पर, जो इस क्षेत्र के साथ यूरोपीय संघ की प्रतिक्रिया के बारे में है? मुझे लगता है कि जब बात सुरक्षा की आती है तो यूरोपीय संघ के संबंध में, यदि आप सहेलियन देशों की ओर से देखें तो उन्होंने यूरोपीय संघ से वास्तव में बाहर निकलने के लिए कहा है लेकिन जब बात विकास की आती है तो वे इतने विरोधी नहीं रहे हैं।
उन्होंने अपने बातचीत के दरवाजे खुले रखने की कोशिश की है, क्योंकि वे इन देशों से मिलने वाली विकास मदद पर निर्भर हैं।
इसलिए, यह देखना बाकी है कि यूरोपीय संघ ज़मीनी स्तर पर लोगों को शामिल करने और उनका विश्वास जीतने की कोशिश कैसे करेगा। यह इस पर निर्भर करता है कि वे आर्थिक और विकासात्मक मुद्दों से कैसे निपटेंगे। अब तक जो देखा गया है वह यह है कि उन्होंने आर्थिक और विकास के मुद्दों को दरकिनार करते हुए पूरी तरह से सैन्यीकृत नज़रिया अपना लिया है जिससे एक समस्या पैदा हो गई है। और अब यूरोप में ही इस पर पुनर्विचार हो रहा है। वे अपनी रणनीति बदलने जा रहे हैं और इस क्षेत्र को छोड़ने की बजाय इस क्षेत्र को अलग तरीके से देखने की कोशिश करेंगे। वे सैन्य नेताओं को शामिल करने का प्रयास कर सकते हैं। और हाँ, प्रवासन परियोजना पर, मुझे लगता है कि यूरोपीय संघ अब प्रवासन पर एक नया समझौता लेकर आया है। जब अफ़्रीकी प्रवासन की बात आती है तो यूरोपीय संघ अफ़्रीकी प्रवासियों को प्रशिक्षण और कौशल प्रदान करने पर विचार कर रहा है। यदि ऐसा हुआ,

तो शायद यह प्रवासन के संदर्भ में अफ़्रीका के लिए लाभकारी होगा।

ठीक है, डॉ. मौशुमि बासु।

राजदूत विजय ठाकुर सिंह

डॉ. मौशुमि बासु

सवाल पूछने के लिए धन्यवाद। मैं सबसे पहले उपनिवेशवाद पर अनु के सवाल का जवाब दूंगी, यह अकेले उपनिवेशवाद को दोष नहीं दे रहा है। मेरा फोकस उस प्रक्रिया पर है जिसके तरह निर्णय लेने में स्थानीय अधिकारियों की तुलना में बाहर के देशों के पास अधिक अधिकार हैं। यही इसका सार है। तो, कौन है जो बाहर के देशों को अधिक लाभ उठाने का मौका दे रहा है। यह एकतरपा प्रक्रिया नहीं है- हालाँकि साथ ही यह भी एक तथ्य है कि यूरोपीय लोगों को यह कहने की ज़रूरत है कि ठीक है, हम वापस चले जाते हैं। मेरा मतलब है, इन देशों के मुद्रा भंडार का कुछ हिस्सा फ्रांस में जमा है, जो स्पष्ट रूप से चिंता का विषय है। मेरे कहने का मतलब है कि क्या कोई दूसरा देश ऐसा करेगा? तो ये कुछ ऐसी बातें हैं जिनका बचाव करना अब और मुश्किल होता जा रहा है।

अब, जब बात आतंकवाद की आती है, तो कुछ लोगों ने पूछा और यहाँ मैं कहना चाहूँगी, कि आतंकवाद से केवल सैन्य तरीकों से नहीं निपटा जा सकता है- आपको विकास पर भी ध्यान देना होगा। यदि आप विकास पर ध्यान देंगें, तो आप लोगों को दूर कर पाएंगे। इसलिए, यह एक सैन्यवादी समाधान नहीं हो सकता है।

और वह सीखना, फिर से सीखना एक तथ्य है जिसे संयुक्त राष्ट्र भी स्वीकार कर रहा है। संयुक्त राष्ट्र शांति स्थापना अभियानों की संख्या में वास्तव में गिरावट आई है। उदाहरण के लिए, माली में 10 वर्षों तक चला अभियान, जहाँ संयुक्त राष्ट्र स्वंय हमले का निशाना बना, बहुत सारे सबक सीखने और दृष्टिकोण में उन अंतरालों के आंतरिककरण बनाने की जरूरत है। यह एक ऐसी स्थिति है जो यह सुनिश्चित करेगी कि कम- से- कम सरकारें, अंतरराष्ट्रीय संगठन ये सबक लें और अपने एक साथ आने को पुनर्गठित एवं पुनर्निर्धारित करें।

जब आप विकास के बारे में बात करते हैं, या जब मैं विश्व बैंक की मदद को देखती हूँ, जो कि विश्व बैंक का सहायता ऋण है। तो आमतौर पर होता यह है कि भुगतान संतुलन संकट के बाद विश्व बैंक यह कहने लगता है कि ये ऐसे क्षेत्र हैं जिन्हें विकसित करने की आवश्यकता है।

अब, निश्चित रूप से उन क्षेत्रों का बाहर की दुनिया से एक संबंध जरूर है। अब, मुद्दा यह है कि जब सब कुछ गड़बड़ है, तो ये विकास कार्यक्रम कैसे संचालित होते हैं? जाहिर है, उन पर ताकतवर लोगों का कब्ज़ा है।

अफ़्रीका में, अत्यधिक ऋणग्रस्त देशों के लिए एक पहल हुआ करती थी, जिसे आईएमएफ द्वारा चलाया जाता था और जब शोध किया गया था, तो यह पाया गया कि ये पहल सिर्फ उन पैसों से नहीं चल रही थीं जिसे देशों ने दिया था बल्कि ऋण पर मिलने वाले ब्याज के पैसों से चल रही थीं। तो, यह एक गोल चक्कर जैसा है।

चूँकि संगठन व्यवसाय में बने रहना चाहते हैं। कोई भी बाहर नहीं होना चाहता। इसलिए, वे खुद में परिवर्तन करते हैं और परिवर्तन का कुछ हिस्सा बहुत समस्याग्रस्त होता है। अफ़्रीका की कहानी यही सब बयां करती है और साहेल विशेष रूप से यही कहता है। मैं हरित पहल के संदर्भ में कह रही हूँ। देखिए, हरित, जैसा कि मैंने हमेशा उल्लेख किया है, हरित, हरे रंग के अलग- अलग शेड, ठीक है लेकिन आप प्राकृतिक आवास को देख कर उसकी जगह किसी दूसरे हरे रंग की दिखने वाली पहल को शुरू नहीं कर सकते।

यूरोपीय संघ (EU) इन सब पर किस प्रकार बातचीत करेगा? ये यूरोपीय संघ की उभरती हुई समस्याएं हैं; शरणार्थी संकट को ही देख लीजिए। निश्चित रूप से, यह एक मानवीय मुद्दा है, लेकिन यह अब प्रतिभूतिकरण मुद्दा बना दिया गया है। ब्रिटेन, जिस तरह से वे मुद्दे का हल नहीं ढूंढ़ पाने के बारे में बात करते रहते हैं, मुझे लगता है, फिर, यह एक समस्या है। ऐसे लोग हैं जो पलायन कर रहे हैं और वे दबाव में पलायन कर रहे हैं, लेकिन हम शरणार्थियों के कैसे देखते हैं, यह चिंता का महत्वपूर्ण विषय है।

और अफ़्रीका के भीतर ही बड़े पैमाने पर विस्थापन के बारे में क्या? ऐसा नहीं है कि वे सभी यूरोप ही जा रहे हैं। उनका विस्थापन अन्य स्थानों पर भी हो रहा है। इसलिए, मुझे लगता है कि यह एक बेहद दुखद स्थिति है, जिसके विभिन्न पहलुओं पर गहन अध्ययन की आवश्यकता है और अनुसंधान के मामले में अफ़्रीका को निश्चित रूप से बढ़ावा देने की आवश्यकता है।

राजदूत विजय ठाकुर सिंह

धन्यवाद, प्रोफेसर मौशुमि बासु। अब मैं डॉ. शाजी को आमंत्रित करती हूँ।

डॉ. शाजी सदासिवन

धन्यवाद। सभी सवाल काफी प्रासंगिक थे। निश्चित रूप से, कुछ प्रश्न ऐसे थे, जो मेरी प्रस्तुति का हिस्सा थे, विशेष रूप से अफ़्रीकी संघ या अफ़्रीकन यूनियन से संबंधित प्रश्न। मैं अफ़्रीकी संघ की ओर से विभिन्न परस्पर विरोधी दलों के बीच मध्यस्थता के असफल प्रयासों की बात कर रहा था, जो सभी पक्षों के लिए स्वीकार्य परिणाम प्राप्त करने से संबंधित था।

वास्तव में, एक अन्य साथी पैनल विशेषज्ञ ने, मुझे लगता है मौशुमि बासु ने, ने भी क्षेत्रीय समस्याओं के स्थानीय समाधान पर बात की है। दरअसर, अफ़्रीकी संघ और ईसीओडब्ल्यूएएस (ECOWAS) जैसे संगठन काफी समय से ऐसा करने की कोशिश कर रहे थे लेकिन साहेल क्षेत्र में इसे विश्वसनीय समाधान नहीं मिल सका या यह ज्यादा प्रगति नहीं कर सका। जब मैं अफ़्रीकी संघ और उसकी कठिनाइयों या कमियों या क्षेत्र में असफलता की बात कर रहा था तो मैं इसी का जिक्र कर रहा था। मुझे लगता है कि वह गंभीर स्थिति वहाँ के विशिष्ट राजनीतिक परिदृश्य के कारण पैदा हुई है। विभिन्न कर्ताओं के हित कभी- कभी इतने भिन्न हो जाते हैं कि मध्यस्थता वास्तव में कठिन हो जाती है।

उदाहरण के लिए, मैंने एक ऐसी स्थिति का भी उल्लेख किया जहाँ चरमपंथी विभिन्न प्रकार के विचार पेश कर रहे थे जो मध्यस्थता क्षमता से बाहर थे। कभी- कभी आपके पास एक निश्चित प्रकार के एजेंडे भी होते हैं जिन्हें मध्यस्थता के भीतर प्रबंधित किया जा सकता है और समस्या की गतिशील प्रकृति के कारण साहेल क्षेत्र में वे नहीं थे, क्योंकि संघर्ष अभी भी जारी हैं और कई संघर्ष जारी हैं। जैसा कि मैंने बताया, इस क्षेत्र की समस्याएं एक दूसरे से जुड़ी हैं, जो, अफ़्रीका के अन्य क्षेत्रों और क्षेत्रीय समस्याओं के साथ इन समस्याओं की तुलना में कुछ हद तक अद्‌वितीय हैं।

दूसरा सवाल ईसीओडब्ल्यूएएस (ECOWAS) पर किया गया था यानि कि क्या ईसीओडब्ल्यूएएस से अलग होना उन देशों के लिए लाभकारी होगा जिन्होंने इस विशेष क्षेत्रीय व्यवस्था से बाहर निकलने का फैसला किया है।

मैं डॉ. निवेदिता रे से पूरी तरह से सहमत हूँ कि साहेल के ये देश अचानक इस विशेष व्यवस्था से बाहर निकल जाते हैं तो शासन संबंधी कई सूक्ष्म मुद्दे हैं जो क्षेत्र के लोगों को प्रभावित करने वाले हैं। हाँ, यह एक शासन संबंधी समस्या है जिसे इन देशों को इस समय दूर करना होगा। इसी तरह से, क्या वे ईसीओडब्ल्यूएएस (ECOWAS) के बाहर संचालन का अपना स्वायत्त क्षेत्र बनाने में सक्षम होंगे, हमें यह भी देखना होगा। मुझे लगता है कि निकट भविष्य में क्या होगा और वे किस प्रकार की विफलता या सफलता हासिल करेंगे, इस पर कोई भी टिप्पणी करना अभी जल्दबाज़ी होगी।

एक और महत्वपूर्ण मुद्दा जिस पर मैं मोटे तौर पर बात कर रहा था वह खाद्य सुरक्षा का था। मैंने सोचा कि इस मानव सुरक्षा चुनौती को साहेल क्षेत्र के संदर्भ में संबोधित किया जाना चाहिए क्योंकि यह एक जटिल मुद्दा है और जो वास्तव में सहेलियन क्षेत्र को अद्वितीय बनाता है। एक तरह से, इस क्षेत्र की विशेषता परंपरागत संघर्ष, गैर- परंपरागत संघर्ष और परंपरागत एवं गैर- परंपरागत सुरक्षा चुनौतियों की भागीदारी एवं अंतर्संबंध हैं। मुद्दा खाद्य सुरक्षा समस्या का है। खाद्य सुरक्षा की समस्या सच में विकट है। दरअसर, संयुक्त राष्ट्र के हाल में किए गए अध्ययनों से पता चलता है कि इस समय जारी हिंसा और संघर्षों की अनूठी प्रकृति के कारण इस समस्या का कोई विशेष समाधान नहीं है। हाँ, सभी महत्वपूर्ण बहुपक्षीय नेता अपने- अपने तरीके से इस समस्या को हल करने में योगदान दे रहे हैं लेकिन ज़मीनी स्तर पर शासन के कई मुद्दे हैं जो इस प्रकार की भागीदारी को बहुत मुश्किल बनाते हैं। यही कारण है कि सहेलियन क्षेत्र पर संयुक्त राष्ट्र की हाल की रिपोर्ट आने वाले वर्षों और दशकों की स्थिति के और खराब होने की बात करती है। मेरा मतलब यह है कि इस समय जब खाद्य सुरक्षा के मुद्दों के समाधान की बात आती है तो यह बहुत ही अस्थिर है।

दूसरा सवाल फ्रांस की भूमिका पर था। मुझे लगता है कि यह बहुत महत्वपूर्ण बिन्दु है। मुझे लगता है डॉ. रे ने भी इस मुद्दे को उठाया है, बहुत बारीकी से बताया है कि साहेल क्षेत्र का क्या होगा

या क्षेत्र के लोग और सरकारें चाहती हैं कि कई यूरोपीय राज्य विकासात्मक और आर्थिक क्षेत्र बने रहें जबकि साहेल देश सुरक्षा के मोर्चे पर उनसे अलग होना चाहते हैं। मुझे लगता है कि यह द्वंद्व साहेल क्षेत्र में बना रहेगा। अब भी, अफ़्रीका में यूरोपी, उत्तरी अमेरिकी भागीदारी महत्वपूर्ण है। उनके बहुपक्षीय संगठन, सहायता एजेंसियों, गैर- सरकारी संगठन अफ़्रीका में बहुत अधिक हैं, इसलिए उनसे अलग होना इतना आसान नहीं हो सकता है लेकिन राजनीतिक और सुरक्षा क्षेत्र में, हाँ, यह एक मुश्किल मुद्दा होने जा रहा है क्योंकि अधिकांश सुरक्षा क्षेत्र में इनमें से कई देशों में फ्रांस के प्रति सैन्य शासन और नागरिक समाज संगठनों की एक प्रकार की नकारात्मक स्थिति बनी रहेगी। इसलिए, साहेल क्षेत्र के लिए, इस द्वंद्व को उचित समय पर संबोधित किया जाना चाहिए।

ये कुछ सामान्य बातें हैं जिन्हें मैं अपने उत्तर के हिस्से के रूप में आप सबके साथ साझा करना चाहूँगा। धन्यवाद, महोदया।

राजदूत विजय ठाकुर सिंह

धन्यवाद। अच्छा, तो मुझे लगता है कि पैनल के सदस्यों ने बहुत दिलचस्प बातें कही हैं और जो तथ्य सामने आए हैं वे ये हैं कि सहेलियन राजनीति निर्णायक मोड़ पर है और इसे बहुत ध्यान से देखने- समझने की जरूरत है। ये किस तरफ जाएगा? नतीजे क्या होंगे? मुझे लगता है कि ये सभी ऐसे मुद्दे हैं जिन्हें शोधकर्ताओं द्वारा उठाए जाने की आवश्यकता है, क्योंकि इसका प्रभाव पड़ेगा और नए आख्यानों का अध्ययन करना होगा। पैनल के हर एक सदस्य ने कई सवाल भी उठाए हैं। इसलिए, हम सभी को स्थिति को अलग- अलग नज़रिए से देखने की जरूरत है।

पैनल के सभी सदस्यों का धन्यवाद। मुझे लगता है कि हम अफ़्रीका पर अपनी बातचीत जारी रखेंगे।

कार्यक्रम

भारतीय वैश्विक
परिषद

आईसीडब्ल्यूए की पैनल चर्चा

विषय

निर्णायक मोड़ पर साहेल क्षेत्र की राजनीति शासन और सुरक्षा की भावी चुनौतियाँ

29 फरवरी 2024 | 1530 - 1615 बजे

सम्मेलन कक्ष, सप्रू हाउस

कार्यक्रम *

1530-1535 बजे	**अध्यक्ष का स्वागत भाषण** **राजदूत विजय ठाकुर सिंह** *महानिदेशक, भारतीय वैश्विक परिषद, नई दिल्ली*
1535-1545 बजे	**डॉ. शाजी सदासिवन** *सहायक प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, हैदराबाद विश्वविद्यालय*
1545-1555 बजे	**डॉ. मौशुमि बासु** *एसोसिएट प्रोफेसर, स्कूल ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज़, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली*
1555-1605 बजे	**डॉ. निवेदिता रे** *निदेशक अनुसंधान, भारतीय वैश्विक परिषद, नई दिल्ली*
1605-1615 बजे	**अध्यक्ष द्वारा संचालित प्रश्नोत्तर सत्र**
1615 बजे	**जलपान**

** पैनल चर्चा का समन्वय आईसीडब्ल्यूए की शोध अध्येता डॉ. गौरी नारायण माथुर द्वारा किया गया*

बायो- प्रोफाइल्स

डॉ. शाजी सदासिवन

डॉ. शाजी सदासिवन हैदराबाद विश्वविद्यालय के राजनीति विज्ञान विभाग में सहायक प्रोफेसर हैं। विभाग का हिस्सा बनने से पहले ये आईसीएसएसआर के धारवाड़, कर्नाटक स्थित इंस्टीट्यूट सेंटर फ़ॉर मल्टी- डिसिप्लिनरी डेवलपमेंट रिसर्च (सीएमडीआर) में सहायक प्रोफेसर थे। इसके अलावा, ये यूनिसेफ और एडमिनिस्ट्रेटिव स्टाफ कॉलेज ऑफ इंडिया (एएससीआई), हैदराबाद में सलाहकार भी रह चुके हैं। डॉ. शाजी जर्मनी के वुर्जबर्ग यूनिवर्सिटी के इंस्टीट्यूट ऑफ पॉलिटिकल एंड सोशल स्टडीज़ में अतिथि प्रोफेसर थे (अप्रैल-जून, 2012 और नवंबर- दिसंबर 2014)। जून- अगस्त 2013 में बार्ड कॉलेज, न्यूयॉर्क, अमेरिका में एसयूएसआई प्रोग्राम में यूएस फॉरेन पॉलिसी फेलो थे। डॉ. शाजी राजनीति विज्ञान विभाग के सेंटर फॉर एडवांस्ड स्टडीज (सीएएस/CAS) के उप- समन्वयक और हैदराबाद विश्वविद्यालय के स्टडी इन इंडिया प्रोग्राम (एसआईपी) के अकादमिक समन्वयक भी रहे हैं। एसआईपी (SIP) में अपने कार्यभार के हिस्से के रूप में उन्होंने संयुक्त राज्य अमेरिका और नार्डिक देशों के विश्वविद्लयों के प्रतिभागियों के लिए समकालीन भारत पर अनुकूलित पाठ्यक्रम तैयार और संचालित किए। उनकी अनुसंधान रुचि के क्षेत्रों में अंतरराष्ट्रीय संबंध और सार्वजनिक नीति हैं। इन व्यापक क्षेत्रों में इन्होंने विशेष विषयों पर काम किया और शोधपत्र प्रकाशित किए जैसे- विकासशील देशों, विशेषरूप से अफ्रीकी-एशियाई क्षेत्र के साथ भारत के संबंध, प्रौद्योगिकी हस्तांतरण, विकासशील देशों की विदेश नीति और शहरी जल प्रशासन एवं विनियमन। ये हैदराबाद विश्वविद्यालय के राजनीति विज्ञान विभाग में स्नातकोत्तर के छात्रोंक लिए विश्व मामलों में भारत, उभरती शक्तियों की विदेश नीतियां और दक्षिण एशिया की सरकार एवं राजनीति जैसे विषय पढ़ाते हैं। डॉ. शाजी ने आईसीएसएसआर (ICSSR) और यूजीसी, नई दिल्ली जैसे संगठनों के अनुदान सहयोग से अनुसंधान परियोजनाएं पूरी की हैं और वर्तमान में हैदराबाद विश्वविद्यालय में एक अंतरराष्ट्रीय परियोजना का हिस्सा हैं। परियोजना का नाम है- अंतरराष्ट्रीयकरण और वर्चुअल आदान- प्रदानः यूरोपीय संघ एवं एशियाई देशों के बीच सीमारहित, इरास्मस+ सीबीएचई (Erasmus+ CBHE), यूरोपीय संघ द्वारा वित्त पोषित और साथ ही भारत एवं अफ़्रीका के बीच ऊर्जा सहयोग पर आईसीएसएसआर (ICSSR), नई दिल्ली द्वारा स्वीकृत परियोजना।

डॉ. मौशुमि बासु

डॉ. मौशुमि बासु सेंटर फॉर इंटरनेशनल पॉलिटिक्स, ऑर्गेनाइजेशन एंड डिसआर्मामेंट, स्कूल ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज़, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में एसोसिएट प्रोफेसर हैं। उनकी विशेषज्ञता के क्षेत्र में अंतरराष्ट्रीय संगठनों (इंतर और गैर- सरकारी दोनों) विकास और मानवाधिकार पर काम करना शामिल है। ये इंस्टीट्यूट फॉर शोशल एंड इकोनॉमिक चेंज, बैंगलोर में सहायक प्रोफेसर और यूनिवर्सिटी ऑफ ससेक्स के स्कूल ऑफ सोशल साइंसेस एंड कल्चरल स्टडीज़ में विजिटिंग फेलो भी रही हैं। इन्हें यूनिवर्सिटी ऑफ ससेक्स के स्कूल ऑफ सोशल साइंसेस एंड कल्चरल स्टडीज में चार्ल्स वालेस इंडिया ट्रस्ट रिसर्च फेलोशिप और लीवरगहल्मे विज़िटिंग फेलो भी दिया गया था। ये यूनिवर्सिटी ऑफ नेवाडा, लास वेगास और सेंटर फॉर इंटरनेशनल पॉलिटिक्स, ऑर्गेनाइजेशन एंड डिसआर्मामेंट, स्कूल ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज़, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित अंतरराष्ट्रीय एवं तुलनात्मक मानवाधिकार कानून प्रैक्टिकम की सह-निदेशक रही हैं। उन्होंने प्रवासन प्रवाह, श्रम बाज़ार नीतियों और सामाजिक घर्षण पर भी सहयोग किया है, जो एक बड़े अकादमिक अध्ययन *"भारत के वैश्वीकरण में परिवर्तन और घर्षण"*, के हिस्से के रूप में किया गया है, वितपोषण नॉर्वे की अनुसंधान परिषद और नॉर्वेज़ियन यूनिवर्सिटी ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी द्वारा किया जा रहा है।

डॉ. निवेदिता रे

डॉ. निवेदिता रे, भारतीय वैश्विक परिषद, सप्रू हाउस, नई दिल्ली में निदेशक अनुसंधान हैं। उन्होंने उप- सहारा अफ्रीका की विदेश नीति और सुरक्षा मुद्दों पर शोध किया है। उनकी विशेषज्ञता के क्षेत्र में अफ्रीकी मामले, प्रवासी अध्ययन, लिंग और संघर्ष समाधान, भारतीय विदेश नीति, भारत- अफ्रीका संबंध, ब्रिक्स, आबीएसए, दक्षिण- दक्षिण विकास सहयोग, भारतीय प्रवासी, समुद्री सुरक्षा, राजनीतिक और सुरक्षा जोखिम विश्लेषण शामिल हैं। उन्होंने भारत और विदेशों में विभिन्न राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय सेमिनारों में शोध पत्र प्रस्तुत किए हैं। इन्होंने पत्रिकाओं, संपादित पुस्तकों के अध्यायों, वेबसाइटों में लेख लिखे हैं। इन्होंने *अफ्रीका एंड इंडिया: ए पार्टनरशिप फॉर डेवलपमेंट एंड ग्रोथ* और *टैगोर द इटरनल सीकर: फुटप्रिंट्स ऑफ द वर्ल्ड ट्रैवलर*; *इंडिया एंड अफ्रीका: द रोड अहेड* और *इंडिया एंड अफ्रीका लुकिंग अहेड: कंटेम्परेरी रियलिटीज एंड इमर्जिंग प्रॉस्पेक्ट्स*, नाम की पुस्तकों का संपादन किया है। इन्होंने *इंडियाज़ इंगेज़मेंट विद ईस्ट अफ्रीका: ऑपरचुनीटीज़ एंड चैलेंजेज*, नाम की किताब भी लिखी है। इनकी वर्तमान शोध परियोजना का विषय है 'अफ्रीकी एशियाई मुठभेड़'।

आईसीडब्ल्यूए के बारे में

भारतीय वैश्विक परिषद (आईसीडब्ल्यूए) की स्थापना 1943 में सर तेज बहादुर सप्रू और डॉ. एच. एन. कुंजरू के नेतृत्व में प्रख्यात बुद्धिजीवियों के समूह द्वारा किया गया था। इसका मुख्य उद्देश्य अंतरराष्ट्रीय संबंधों पर भारतीय परिप्रेक्ष्य बनाना और विदेश नीति के मुद्दों पर ज्ञान एवं विचार भंडार के रूप में काम करना था।

परिषद आज आंतरिक संकाय के साथ- साथ अतिथि विशेषज्ञों के माध्यम से नीति अनुसंधान के कार्य करती है। यह नियमित रूप से बौद्धिक गतिविधियों का आयोजन करता है जिसमें सम्मेलन, सेमिनार, गोलमेज सम्मेलन, व्याख्यान भी शामिल होते हैं। परिषद प्रकाशन कार्य भी करता है। इसके पास समृद्ध पुस्तकालय है, इसकी वेबसाइट सक्रिए रूप से काम करती है और यह ***इंडिया*** नाम की त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन भी करता है। अंतरराष्ट्रीय मुद्दों पर समझ को बढ़ावा देने और आपसी सहयोग के क्षेत्रों में विकास करने हेतु आईसीडब्ल्यूए ने अंतरराष्ट्रीय विशेषज्ञ- समूहों और शोध संस्थानों के साथ 50 से अधिक अनुबंध किए हैं।

परिषद की साझेदारी भारत के अग्रणी शोध संस्थानों, विशेषज्ञ समूहों और विश्वविद्यालयों के साथ भी है।

भारतीय वैश्विक
परिषद

सप्रू हाउस, नई दिल्ली

www.icwa.in